बाल किलकारी

वर्ष-5, अंक-8 / अक्टूबर 2022

- कविता
- कहानी
- तुम्हारी रचना

- जुड़ जाएँगे
- श्रीराम का अभिनय
- लकड़हारे की गुरुभक्ति
- निर्जन द्वीप पर अकेले रॉबिन्सन क्रूसो
- फादर ऑफ इंग्लिश डिक्शनरी सैमुएल जॉनसन

किलकारी
बिहार बाल भवन

सहयोग राशि
₹ 20/-

तुम्हारी पेंटिंग

सुनीता कुमारी, दरभंगा

रिया कुमारी, दरभंगा

अंशु कुमारी, वर्ग–7

जागृति कुमारी, वर्ग–11

निशा कुमारी, वर्ग–8
रा. क. मध्य विद्यालय, कुचायकोट, गोपालगंज

कर्ण कुमार, वर्ग–11

वर्ष–5, अंक–8

बच्चों की मासिक पत्रिका

बाल किलकारी

अक्तूबर, 2022

चिट्ठी–पत्री		2
संपादकीय		3
कार्टून का पन्ना		4
कविता		
☐ जुड़ जाएँगे	– भगवती प्रसाद द्विवेदी	5
☐ अहा! दीवाली आई	– श्याम सुंदर श्रीवास्तव	6
☐ भालू जी	– विज्ञान व्रत	27
☐ गाँव हमारा	– नरेन्द्र सिंह निहाल	28
☐ जंगल गीत	– महेन्द्र कुमार वर्मा	29
☐ चंदा रे चकोरे	– पूजा भारद्वाज	30
कहानी		
☐ नया संकल्प	– रेनू मंडल	7
☐ श्रीराम का अभिनय	– हरेन्द्र श्रीवास्तव	10
☐ निर्जन द्वीप पर अकेले (रॉबिन्सन क्रूसो)	– डेनियल डीफो	13
☐ आंटी का पर्स	– आशा शर्मा	31
☐ लकड़हारे की गुरुभक्ति	– पुष्पेश कुमार पुष्प	34
☐ पिल्ला बना साथी	– हरीश कुमार 'अमित'	37
☐ जगमग दीपावली	– कविता मुकेश	39
☐ तीन लघु बाल कहानियाँ	– शिवचरण सरोहा	42
पहेली/चुटकुले		
☐ पहेलियाँ	–	17
☐ चुटकुले	–	22
लेख		
☐ इस दिवाली कुछ नया करें	– रजनी अरोड़ा	15
परिवेश		
☐ नारियल पानी	– संदीप पांडे 'शिष्य'	18
जीवनी		
☐ फादर ऑफ इंग्लिश डिक्शनरी सैमुएल जॉनसन	– कुसुम अग्रवाल	43
समाचार में		
☐ 2–8 अक्तुबर वन्यजीव सप्ताह	– सुमन कुमार	47
आत्म संस्मरण		
☐ पिता की सीख	– ए.पी.जे. अब्दुल कलाम	20
तुम्हारी रचना		23
चित्रकथा		
☐ बाबा नागार्जुन	– नीरद	

चिट्ठी–पत्री

बाल किलकारी, माह सितम्बर, 2022 प्राप्त हुआ है। देखकर बहुत खुशी हुई है। आपलोगों का यह प्रयास बच्चों के जीवन एवं कैरियर के लिए अवश्य ही फलदायी होगा।

मेरा एक व्यक्तिगत सुझाव यह है कि प्रत्येक माह 500 शब्दों में बच्चों से किसी खास विषय पर निबंध प्रतियोगिता के रूप में प्रथम पुरस्कृत निबंध को इस मैगजीन में प्रकाशित भी किया जाय एवं प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार बच्चों का नाम, फोटो व पता भी प्रकाशित किया जाय। साथ ही, उन्हें प्रशस्ति–पत्र इत्यादि से संस्था की ओर से पुरस्कृत भी किया जाए।

आशा है, मेरे इस सुझाव पर विचार करेंगे।

सितम्बर–2022 की यह पत्रिका मुझे पहली बार मिली है। इसके पूर्व कोई पत्रिका मुझे प्राप्त नहीं हुई है। इसलिए मेरा मानना है कि मेरी एक वर्षीय सदस्यता सितम्बर–2022 से अगस्त, 2023 तक होनी चाहिए। इस संबंध में भी वस्तुस्थिति से अवगत कराने की कृपा करेंगे।

ललित कुमार सिंह
भूमि सुधार उप समाहर्ता,
पुपरी (सीतामढ़ी)

आपकी पत्रिका का सितंबर 2022 का अंक मुझे पढ़ने को मिला। पत्रिका पढ़ने के बाद अति प्रसन्नता हुई, क्योंकि बाल साहित्य में बाल विकास के लिये, जितने मानक निर्धारित किये गये हैं – कहानी, कविता, पेंटिंग चित्रकथा, एकांकी, ज्ञान–विज्ञान – पत्रिका सारी विधाओं पर काम कर रही है। आज के दौर में जहाँ संचार साधनों की मनोरंजक निर्भरता, उनके बचपन के साथ खिलवाड़ तथा सांस्कृतिक मूल्यों का हनन कर रही है ऐसी स्थिति में आपकी पत्रिका की पाठ्य सामग्री बच्चों का उन साधनों से मोह भंग कर साहित्यिक परिवेश में स्वस्थ्य, मनोरंजन देने में समर्थ सिद्ध हो रही है। ऐसा मेरा आकलन है।

बहुत–बहुत शुभकामनाओं के साथ।

देवीप्रसाद गौड़,
मथुरा

संपादकीय

दशहरे की कहानी

प्यारे बच्चो,

हमारे यहाँ सुरों–असुरों, देवों–दानवों के बीच संघर्षों और युद्धों की अनेक कहानियाँ हैं।

उनमें से एक कहानी है महिषासुर की। महिषासुर रंभ नामक एक असुर का पुत्र था जो मायावी भी था। वह इच्छा अनुसार भैंसे का रूप भी धारण कर लेता था। वह स्वयं को इतना अधिक शक्तिशाली बनाना चाहता था कि देवताओं को भी पराजित कर दे। लेकिन इसके लिए तो भगवान का वरदान चाहिए था। फिर क्या था, उसने ब्रह्मा जी को प्रसन्न करने के लिए घोर तपस्या की। ब्रह्मा जी प्रसन्न हो गए और वर माँगने को कहा। महिषासुर ने वर माँगा कि देवताओं, राक्षसों और मनुष्यों में से कोई भी उसे पराजित न कर पाए, उसे मार ना सके। ब्रह्मा जी ने वर दे दिया। अब तो ब्रह्मा जी का वरदान पाकर महिषासुर भारी आतंक मचाने लगा। उसने देवताओं को भी देवलोक से भगा दिया। इस पर सभी देवतागण ब्रह्मा, विष्णु और महेश यानी शंकर जी के पास त्राहिमाम–त्राहिमाम करते पहुँचे, महिषासुर से अपनी रक्षा की गुहार लगाई। त्रिदेव ने महिषासुर का अंत करने के लिए अपने तेज से एक परम तेजोमय शक्ति उत्पन्न की। उन स्त्री रूपी शक्ति को उन्होंने अपने दिव्यास्त्र प्रदान किए। देवताओं ने भी उन्हें अपने अस्त्र–शस्त्र और वाहन दिए। इस प्रकार देवी दुर्गा के रूप में एक अत्यंत दिव्य शक्ति प्रकट हुई जिनकी दस भुजाएँ थीं और जो सिंह पर सवार थीं।

देवी ने महिषासुर को ललकारा। दोनों के बीच भयंकर युद्ध शुरू हुआ जो लगातार नौ दिनों तक चलता रहा। दसवें दिन देवी दुर्गा ने महिषासुर का वध कर दिया। इस प्रकार वे महिषासुरमर्दिनि कहलाईं। नवरात्र में देवी के नौ रूपों की पूजा नौ दिनों तक की जाती है। दसवें दिन यानी दशमी को विजयादशमी का त्यौहार मनाया जाता है। विजयादशमी के दिन भगवान रामचंद्र ने लगातार आठ दिन तक युद्ध करने के बाद लंकापति रावण का वध किया था। जानते हो, रावण इतना शक्तिशाली था कि उससे युद्ध करने के पहले रामचंद्र जी ने शक्ति के लिए देवी दुर्गा का आह्वान किया था, उनकी पूजा की थी। महाकवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ने इसी प्रसंग पर अपनी विख्यात कविता रची – 'राम की शक्ति–पूजा'।

दशहरे का त्यौहार पूरे हर्ष, उल्लास और श्रद्धा के साथ लगभग पूरे भारत में मनाया जाता है। उत्तर भारत में गाँव–गाँव में रामलीलाओं का आयोजन होता है। पूर्वी भारत में तो इसकी छटा निराली होती है। कोलकाता के दशहरे को यूनेस्को, जो कि संयुक्त राष्ट्र की एक संस्था है, ने विश्व धरोहर के रूप में मान्यता दी है। यूँ सुदूर दक्षिण में मैसूर का दशहरा और सुदूर उत्तर में हिमाचल के कुल्लू का दशहरा भी बहुत प्रसिद्ध है।

दशहरे के लिए बहुत बधाई और शुभकामनाएँ!

अंक कैसा लगा बताना। इस अंक से विश्व विख्यात 'रॉबिन्सन क्रूसो की यात्राएँ' धारावाहिक शुरू किया जा रहा है, आशा है तुम्हें पसंद आएगा।

तुम्हारा
शिवदयाल

कार्टून का पन्ना : टिल्लू

जुड़ जाएँगे

भगवती प्रसाद द्विवेदी

घी के दिये जलाएँगे
मिट्टी से जुड़ जाएँगे।

दीप जलेंगे दम-दम-दम
छिटके चाँदनियाँ चम-चम
रफूचक्कर हो जाएगा
मुँह पर मास्क लगाए तम

खील-बताशे खाएँगे
खेतों से जुड़ जाएँगे।

नहीं पटाखे फोड़ेंगे
ऐटम बम ना छोड़ेंगे
जहर न फैल सके बारूदी
बच्चों का मुँह मोड़ेंगे

पर्यावरण बचाएँगे
कुदरत से जुड़ जाएँगे।

ज्योति-पर्व हो जगर-मगर
दमकें सारे गाँव-नगर
हम सब चहकें चिड़ियों जैसे
मह-मह महकें आँगन-घर

सबको सुख पहुँचाएँगे
खुद सुख से जुड़ जाएँगे।

नहीं कहीं हो अँधियारी
नहीं बेबसी-लाचारी
हर जीवन हो ज्योतिर्मय
चहुँदिशि फैले खुशहाली

श्री-गणपति गुण गाएँगे
संस्कृति से जुड़ जाएँगे।

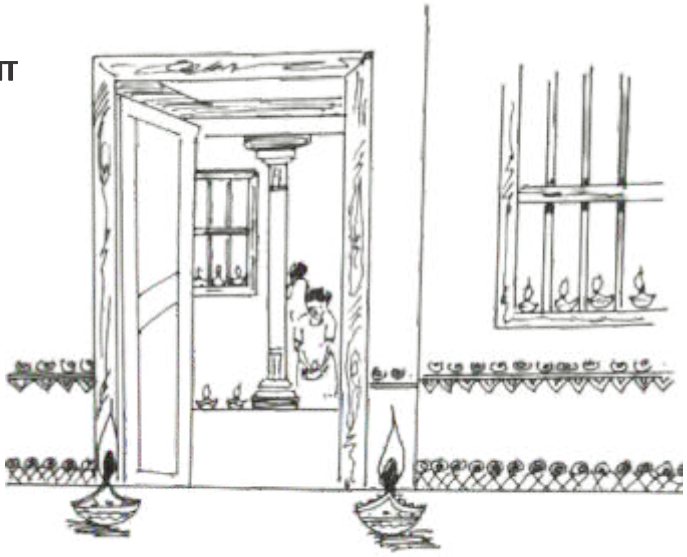

अहा! दीवाली आई

श्याम सुन्दर श्रीवास्तव 'कोमल'

अहा! जले हैं दीप नवल शुभ दिवाली है आई।

घर, आंगन, चौबारे, छज्जे, बालकनी दीवारें।
धुले, पुते घर में दीपों की, झिलमिल लगी कतारें।
पूरे घर के कोने-कोने की हो गई सफाई।
अहा! जले हैं दीप नवल शुभ दिवाली है आई।।

ये मंगल त्योहार सदा ही, सीख हमें यह देता।
जो चलता है राह सत्य की, विजय प्राप्त कर लेता।
घृणा, द्वेष, मद, कलुष, कपट सब त्यागो बैर बुराई।
अहा! जले हैं दीप नवल शुभ, दिवाली है आई।।

सत्य पराजित हुआ नहीं है, सदा असत ही हारा।
इसीलिए तो श्रीराम ने रावण को संहारा।
मिली सत्य को जीत खुशी से दिवाली मनाई।
अहा! जले हैं दीप नवल शुभ, दिवाली है आई।।

नया संकल्प

रेनू मंडल

सनी और उसके दोस्तों ने 100 पटाखों की लड़ी में आग लगाई और जल्दी से पीछे हट गए। धाँय-धाँय की आवाज से पूरी सोसायटी गूँजने लगी और सारा पार्क धुएं से भर गया। धुआँ तनिक छँटा ही था, तभी एक चिड़िया बेहोश होकर वहाँ आ गिरी। उसे देख सनी घबरा गया और जोर से चिल्लाया, ''मम्मी, देखो, चिड़िया बेहोश हो गई।'' मम्मी बाहर आईं और चिड़िया पर पानी के छींटे मारे। कुछ पलों में ही उसके शरीर में हरकत हुई और उसने आँखें खोल दीं। सनी को रुआँसा देख मम्मी बोलीं, ''घबराओ

मत, यह ठीक हो जाएगी। वह जानती थीं, सनी को पशु-पक्षियों से बहुत लगाव है। उन्होंने चिड़िया को पानी पिलाया। पानी पीकर उसे राहत मिली। वह उठी और अपने घोंसले में जा बैठी। सनी खुश हो गया। उसका दोस्त आरव बोला, ''अब चल, बाकी पटाखे छुड़ाएँ।''

''नहीं आरव, पापा ने कल ही मुझसे कहा था कि हमें पटाखे नहीं छुड़ाने चाहिए किंतु मैंने उनकी बात नहीं मानी। देखो न, पटाखों के धुएँ की वजह से चिड़िया बेहोश हो गई। ऐसे ही दूसरे पशु-पक्षियों को नुकसान पहुँचता होगा।'' सनी के पापा भी अब तक वहाँ आ गए थे. वह बोले, ''सनी ठीक कह रहा है। नुकसान सिर्फ पशु-पक्षियों का ही नहीं, हम इंसानों का भी है।'' ''वह कैसे अंकल? आरव ने उत्सुकता से पूछा। ''आओ, हम सब यहाँ बैठते हैं।''

सब बच्चे लॉन में पापा को घेरकर बैठ गए। पापा समझाने लगे, ''देखो, पटाखों से हानिकारक गैसें और धुआँ निकलता है जिससे वातावरण प्रदूषित होता है।'' ''एक मिनट अंकल,'' बंटी बोला। ''दीवाली साल में सिर्फ एक बार आती है। उस दिन थोड़ा सा प्रदूषण हो भी गया तो क्या?

''तुम ठीक कह रहे हो बंटी। दीवाली साल

में एक बार आती है किंतु पटाखे तो लोग कई दिन पहले से छुड़ाने लगते हैं। कल दीवाली है और तुम लोग आज से ही पटाखे छुड़ा रहे हो न और तुम ही क्या, तुम जैसे देश में करोड़ों बच्चे पटाखे छुड़ाते हैं। सोचो, कितना प्रदूषण होता होगा!'' सभी बच्चे सोच में पड़ गए। ''अच्छा, मुझे एक बात बताओ। तुम लोग क्या ओज़ोन परत के बारे में जानते हो? पापा ने पूछा। ''नहीं।' सबने इंकार में सिर हिलाया। पापा बताने लगे, ''बच्चो, सूरज की सीधी किरणें अगर धरती पर पड़ें, तो वे हमें बहुत नुकसान पहुँचाएँगी इसलिए धरती और आसमान के बीच में एक परत होती है जिससे सूरज की किरणें छनकर धरती पर पहुँचती हैं। इस परत का नाम ओज़ोन परत है। जानते हो, धरती पर जीवन इस ओज़ोन परत के कारण ही है किंतु दुख की बात है कि वातावरण में फैल रहे प्रदूषण के कारण इस परत में सुराख हो गया है। इस सुराख से अब सूरज की हानिकारक किरणें सीधी धरती पर आ रही हैं जिससे मौसम में बहुत बदलाव हो रहे है। बहुत अधिक गर्मी, बहुत अधिक सर्दी, बारिश, सूखा आदि। पहले अक्टूबर का महीना कितना सुहावना होता था। न गर्मी, न सर्दी किंतु अब अक्टूबर में भी कितनी गर्मी पड़ रही है और यह सब ओज़ोन परत में हुए सुराख के कारण है जो दिनोंदिन बढ़ता ही जा रहा है।''

चिंटू ने भोलेपन से पूछा, ''अंकल, क्या इस सुराख की सिलाई नहीं हो सकती? सनी के पापा हँस पड़े, ''चिंटू, ओज़ोन कोई कपड़ा नहीं वरन् गैस है। यह परत गैस से बनी हुई है और यह सुराख अन्टार्टिका के उपर है। इस सुराख को सिर्फ प्रदूषण कम करके ही भरा जा सकता है। तुम लोगों को याद है, जब कोरोना फैला था तब लॉकडाउन लगा था।'' ''हां पापा, याद है,'' सनी ने कहा। पापा बोले, ''उस समय प्रदूषण कम होने के कारण यह सुराख थोड़ा छोटा हो गया था।''

सनी कुछ सोचते हुए बोला, ''पापा, फिर क्या दीवाली मनानी छोड़ देनी चाहिए।'' ''बिल्कुल नहीं। दीवाली हमारा सबसे प्रमुख त्योहार है। उसे छोड़ने का हम सोच भी नहीं सकते किंतु बच्चों, पटाखों को छोड़कर क्या एक नए तरीके से दीवाली नहीं मनाई जा सकती?'' ''कैसे अंकल,'' बंटी और आरव एक साथ बोले।

''कल हम मिट्टी के दियों और मोमबत्ती से अपने घरों में प्रकाश करेंगे। सांस्कृतिक कार्यक्रम और पार्क में सामूहिक भोज करेंगे। देखना, दीवाली का कितना आनंद आएगा। हमारी देखा-देखी दूसरे भी ऐसा करेंगे तो पर्यावरण स्वच्छ होने लगेगा।''

''हां, और ओज़ोन परत की धीरे-धीरे सिलाई भी होने लगेगी,'' बच्चे हँसकर बोले और चल दिए एक नए संकल्प के साथ अपने अपने घरों की ओर।

■■■

श्रीराम का अभिनय

हरेन्द्र श्रीवास्तव

हर साल की तरह इस साल भी दशहरा के अवसर पर श्रीरामलीला का मंचन होना था। आसपास के क्षेत्र में हायर सेकेण्डरी स्कूल जबकसा के श्रीरामलीला मंचन कार्यक्रम की बड़ी ख्याति थी। आज सांस्कृतिक प्रभारी शिक्षक अरुण यादव जी ने बच्चों को मंचन हेतु पात्रों की भूमिका सौंप दी। सब अपनी-अपनी भूमिका से संतुष्ट और खुश थे।

तभी दीपक बोला– ''सर जी! तेजल इस बार राम की भूमिका करना चाहता है। वह आपको नहीं बता पा रहा है।'' फिर तनिक

सकुचाते हुए कक्षा ग्यारहवीं का छात्र तेजल बोला– ''हाँ सर जी! मैं राम का रोल प्ले करूँगा इस बार।''

''ओके...! मनोरम, तेजल को अपनी श्रीराम वाली भूमिका दे दो और तुम इस बार भरत बन जाओ। ठीक है न...।'' कहते हुए अरुण यादव जी सांस्कृतिक कक्ष से बाहर निकले।

राम की भूमिका पाकर तेजल बहुत खुश था। उसके माँ–बाबूजी राधिका और रघु को भी बहुत अच्छा लगा। राधिका के चेहरे पर मुस्कान देख रघु बोला– ''क्यों..., क्या बात है राधिका ? क्यों मुस्कुरा रही हो ?''

राधिका बोली– ''मैं इसलिए मुस्कुरा रही हूँ, क्योंकि हमारा तेजल बहुत जिद्दी है। हमारी तो एक बात मानता ही नहीं। अपने मूड पर ही रहता है। हमारा तो कुछ भी नहीं सुनता और श्रीरामलीला मंचन के लिए उसे मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचंद्र जी की भूमिका मिली है। वह श्रीराम का अभिनय कर पाएगा कि नहीं।''

'बात तो तुम बिल्कुल सही कह रही हो। कैसे वह श्रीराम का रोल करेगा। घर में तो बहुत परेशान करता है भाई। कुछ बोलो तो मुँह फुग्गा बना लेता है। कहीं भेजो तो जाता ही नहीं। पढ़ने–लिखने के लिए कहो तो हूँ..हूँ..हाँ..हाँ... करते हुए टाइम पास करता है। भविष्य में क्या करेगा वह समझ नहीं आता। मुझे बहुत चिंता होती है उसकी। पर सुना है कि वह श्रीराम बनने के लिए स्वयं तैयार हुआ है। यह जानकर अच्छा लगा कि वह श्रीराम वाला का रोल करेगा...' कहते हुए रघु ने पानी पीकर ग्लास को स्टूल पर रखा।

स्कूल में श्रीरामलीला मंचन का रिहर्सल शुरू हो गया। शिक्षक और बच्चे मन लगाकर तैयारी में जुट गये। तेजल की तैयारी कुछ खास ही थीय क्योंकि वह पहली बार श्रीराम की भूमिका जो कर रहा था। शिक्षक अरुण यादव जी का ध्यान तेजल के एक्टिंग की ओर कुछ अधिक फोकस था। तेजल घर पर भी अभ्यास करता था। जब भी उसे अवसर मिलता श्रीराम के अभिनय के लिखित संवाद को दुहराता। शारीरिक भावभंगिमा के साथ एक्टिंग करता। रघु और राधिका उसकी मेहनत व लगन से बहुत खुश थे। उनका मानना था कि नित अभ्यास भी एक शिक्षक का दायित्व निभाता है।

दशहरा का त्यौहार आया। रात्रि कार्यक्रम का आयोजन हुआ। श्रीरामलीला मंचन हेतु एक चौकोर मंच तैयार था। सजावट भी बड़ी अच्छी थी। कार्यक्रम का श्रीगणेश हुआ। मंच का परदा उठा।

अयोध्या के राजमहल का दृश्य है। चक्रवर्ती सम्राट महाराज दशरथ अपनी महारानी कैकेई के भवन में विराजित हैं। महारानी कैकेई के चेहरे पर कोप है। महाराज दशरथ सिर पकड़ कर बैठे हैं। उनके बुलावे पर ज्येष्ठ पुत्र राम आता है। सन्नाटा पसरा हुआ है।

राम बना तेजल एक आज्ञाकारी पुत्र राम का बहुत बढ़िया अभिनय करने लगा। उसकी बॉडी लेंग्युएज बड़ी गजब की थी। शाही चाल–चलन बहुत सुंदर। वेशभूषा अच्छा फब रहा था। शिक्षकों का ध्यान तेजल पर ही अधिक था। उसकी संवाद अदायगी सबको भा रही थी। तेजल राम–वनगमन प्रसंग में पिता महाराज दशरथ की आज्ञा पाकर वन

प्रस्थान के दृश्य में श्रीराम का बहुत बढ़िया अभिनय कर रहा था। दर्शकवृंद करतल ध्वनि के साथ तेजल के अभिनय की तारीफों के पुल बाँध रहे थे। तीन दिनों तक चले कार्यक्रम में राम-भरत मिलाप, निषादराज के द्वारा गंगा पार, शबरी आश्रम प्रस्थान, खर-दूषण संहार, सीताहरण पूर्व स्वर्णमृग का पीछा करना, राम-सुग्रीव मैत्री, लक्ष्मण मुर्छा पर रामविलाप, रावणवध और अयोध्या आगमन जैसे दृश्यों में तेजल ने श्रीराम का बखूबी अभिनय किया। अपनी कला प्रतिभा से उसने सबका मन मोह लिया। पूरे मंचन कार्यक्रम दिवस तक तेजल छाया रहा।

श्रीराम का अभिनय करने के बाद तेजल के स्वभाव में बहुत बदलाव आया। उसका चिड़चिड़ापन दूर हुआ। बातचीत का तरीका बदल गया। दूसरों के साथ बहुत अच्छा व्यवहार करने लगा। अपने माँ-बाबूजी की हर बात मानने लगा। स्कूल में सहपाठियों के साथ अब उसका रुखा व्यवहार नहीं रहा। तेजल के स्वभाव में परिवर्तन देख शिक्षकों को आश्चर्य तो हुआ ही, साथ ही उन्हें खुशी भी हुई।

रघु और राधिका तेजल से अब बहुत खुश थे। तेजल की पढ़ाई-लिखाई के प्रति रुचि बढ़ गयी थी। पूजा-पाठ में भी तो अब उसका मन लगने लगा था। अब तो खेलकूद के प्रति भी उसका रुझान देखते ही बनता था। उसे पुलिस विभाग की सेवा के प्रति विशेष रुचि होने लगी थी। वह तैयारी में भी लग गया। उसकी मेहनत रंग लाई। इस साल उसने कक्षा बारहवीं की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली। साथ ही बी.एस.एफ. का रिटन व फिजिकल टेस्ट भी पास कर लिया। रघु और राधिका तेजल की लगन व मेहनत देख फूले नहीं समाये।

एक दिन रघु ने तेजल से कहा कि बेटा बी.एस.एफ. की परीक्षाएँ तूने पास कर ली, अब तुम्हारी क्या इच्छा है। तेजल का जवाब था कि मैं भी तो यही सोच रहा हूँ कि क्या किया जाय। माँ को तालाब से आने दें, फिर बात करते हैं। वह भी अपनी राय रखेगी। मेरा मन भी घर-परिवार, समाज और देश के लिए कुछ अच्छा करना चाहता है।

फिर तीनों में विचार-विमर्श हुआ। रघु और राधिका ने सब कुछ तेजल पर ही छोड़ दिया। अंत में तेजल ने अपनी बात रखते हुए कहा- ''माँ! बाबूजी ! मेरी दिली इच्छा है कि मैं बी एस एफ ज्वाइन करके माँ भारती की सेवा करूँ। आज दहशतगर्दियों ने हमारा जीना हराम कर दिया है। आज सारा देश आतंक की आग से जल रहा है। इस आतंक के खिलाफ मैं जंग लड़ना चाहता हूँ। आप दोनों मुझे ट्रेनिंग सेंटर भेजें। मुझे आप दोनों का आशीष चाहिए।''

रघु और राधिका ने अपने इकलौते बेटे तेजल को बॉर्डर सेक्युरिटी फोर्स ट्रेनिंग सेंटर देहरादून जाने के लिए अनुमति दे दी। गाँववालों को इसकी जानकारी हो गयी। शिक्षकों को भी अवगत हो गया। उन्हें भी बड़ा गौरवान्वित महसूस हुआ। तेजल घर से निकलने से पहले रघु और राधिका के पैर छूने के लिए झुका, तो उन्हें तेजल का श्रीराम वाला अभिनय स्मरण होने लगा। उन्हें लग रहा था कि आज सचमुच उनका बेटा वन को प्रस्थान कर रहा है महाराज दशरथ।

■■■

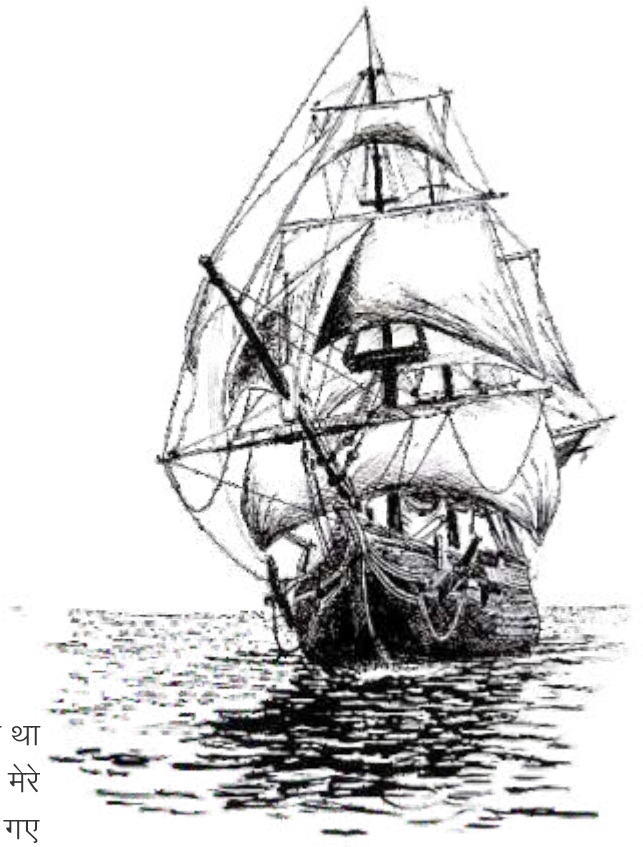

रॉबिन्सन क्रूसो

निर्जन द्वीप पर अकेले

डेनियल डीफो

(अनुवाद – सीताराम शरण)

मेरा जन्म 1632 में यार्क शहर में हुआ था जो कि इंग्लैंड के उत्तर में पड़ता था। मेरे पिताजी एक विदेशी थे, वे वहाँ आकर बस गए थे। तीन बेटों में सबसे छोटा था और शायद सबसे विद्रोही स्वभाव का भी। जो पसंद आता मैं वहीं करता। किसी की बात नहीं मानता।

मेरे पिताजी मुझे एक वकील बनाना चाहते थे। पर मेरी एकमात्र इच्छा नाविक बनने की थी। मेरे पिताजी ने कोशिश की कि मैं जानूँ एक नाविक की जिन्दगी कितनी जोखिम भरी है, पर मैं छोटा और नासमझ था, मैंने उनकी सलाह न मानी। जब मैं हल शहर के बंदरगाह पर एक दोस्त से मिलने गया तो मैंने पहली बार जहाज पर यात्रा की। मैं इतना रोमांचित था कि तुरंत फैसला किया– मैं नाविक बनूँगा। मैंने पिताजी की अनुमति का इंतजार न किया। जल्द ही मुझे पता लग गया कि समुद्री यात्रा में कैसे तबीयत बिगड़ जाती है। मुझे पहली बार पता चला कि समुद्री तूफान कितना भयंकर और डरावना होता है। लेकिन मैं हार न मानने वाला था।

आठ साल बाद, मेरे जीवन की सबसे बड़ी रोमांचक समुद्री घटना घटी। इस बीच मैं इंग्लैंड छोड़ चुका था और ब्राजील में जा बसा था। जहां मैंने कुछ जमीन खरीद ली और गन्ने की खेती करने लगा। मैं शीघ्र ही धनी बन गया, पर समुद्री यात्रा पर लौटने की प्रबल इच्छा हरदम रहती। मैंने पाया कि गुलामों के व्यापार में बहुत पैसा था। मैंने गुलामों वाले के जहाज पर नौकरी कर ली। हमलोग उस जहाज से अफ्रीका के पश्चिम तट को गुलामों की खोज पर चल पड़े। गुलामों को जहाज से लाते और मुनाफा कमाते। जहाज पर हम कुल चौदह जने

थे– कप्तान, 12 नाविक और मैं।

जब हम अफ्रीका तट के करीब से जा रहे थे। एक भयंकर तूफान आया। बारह दिनों तक लहरें हमारे जहाज को खिलौने की तरह उछालती रहीं। हमें लगा कि अब जहाज डूबने ही वाला है। हमने तय किया कि तट के किसी जगह को जाते हैं जहाँ पहुँचकर अपने जहाज की हम मरम्मत करते। पर हम इसके पहले एक–दूसरे ही तूफान के घेरे में आ गये और वापस समुद्र में आ गये। तट से दूर। तीसरे दिन नाविकों में से एक को जमीन नजर आयी। हम डेक पर दौड़ कर गए देखने। तट हम से बहुत दूर नहीं था। हमें जहाज को डूबने के पहले इसे छोड़ देना था। हमने एक नाव नीचे उतारी और उसे खेते हुए जमीन (तट) की ओर बढ़े। पर पर्वत इतनी ऊँची एक लहर आई और हमारी नाव उलट गई।

हम समुद्र में फेंका गए। कुछ क्षण तो पता नहीं चला कि मैं कहाँ हूँ। फिर मैंने खुद को दूसरी, फिर तीसरी लहर द्वारा उठाया गया महसूस किया। अंत में तट पर पहुँच गया। चुपचाप कुछ देर पड़ा रहा। जीवित से ज्यादा मरा हुआ लगा रहा था। पेट में जितना नमकीन पानी पी लिया था सब उल्टी कर दिया। जब कुछ अच्छा लगने लगा तो घुटनों के बल बैठा और ईश्वर को धन्यवाद दिया कि मैं जिंदा हूँ। नजर उठाकर चारों तरफ दूर–दूर तक देखने पर पाया कि जहाज के लोगों में एक अकेला मैं ही था जो तट पर जीवित पहुँचा था। शायद अन्य नाविक डूब गए हों।

जब मैंने चारों तरफ देखा, तो डर छाने लगा। इस अनजान जगह में मैं कैसे जिन्दा रहूँगा? मैं पूरी तरह भींगा हुआ था और भूखा था। मैंने खाया नहीं था, कुछ पास में था भी नहीं। सूखे कपड़े भी पास में नहीं थे। अंधेरा हो रहा था। चारों ओर खतरनाक जानवर हो सकते थे। मैंने एक पेड़ पर चढ़ने का फैसला किया और रात वहीं गुजारने की सोचा। (क्रमशः)

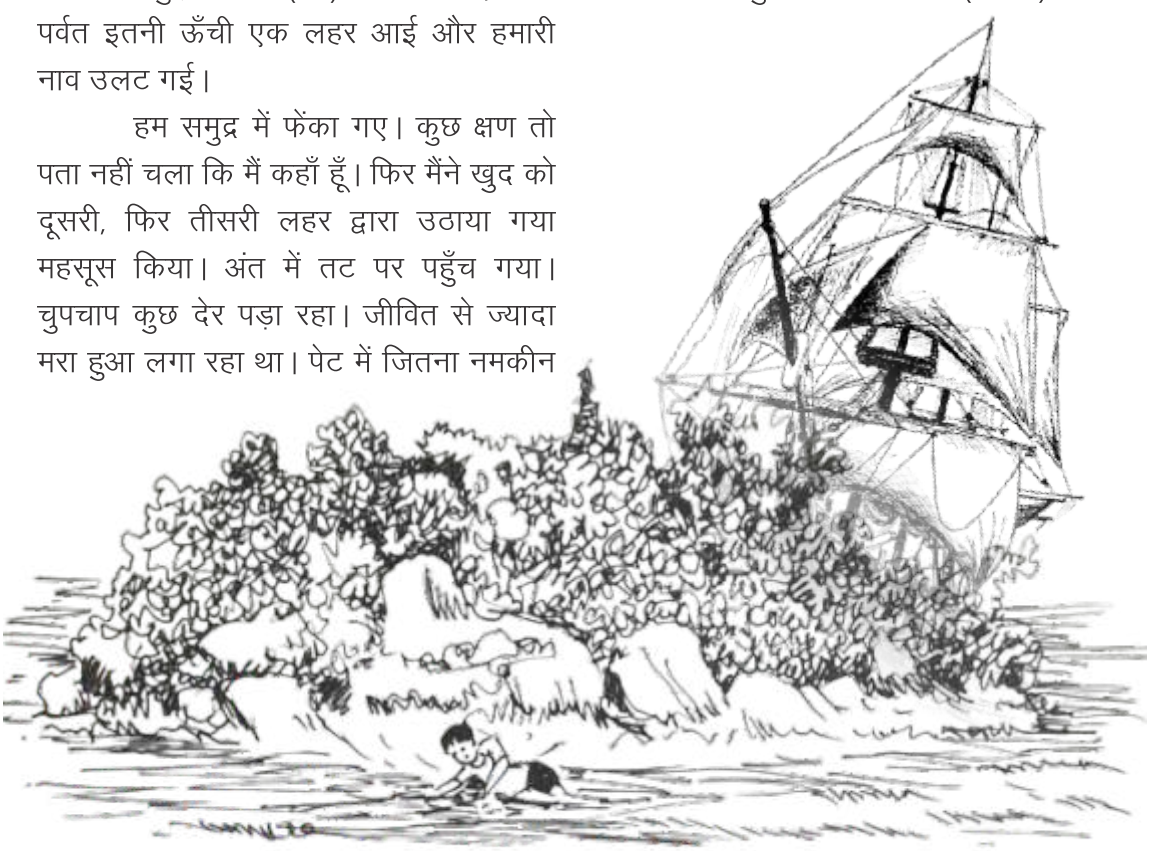

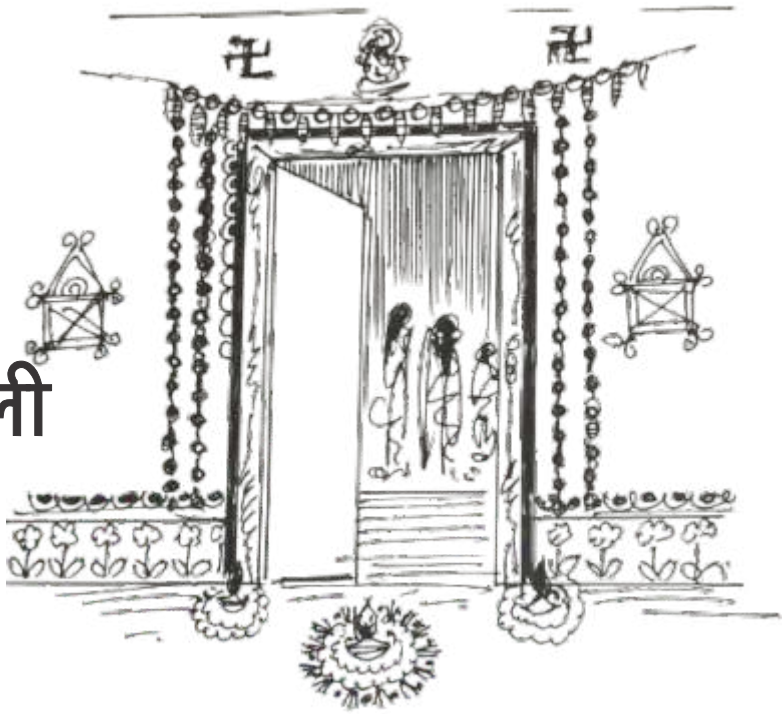

इस दिवाली कुछ नया करें

रजनी अरोड़ा

इस दीवाली पर अपनों को दो प्यार भरे उपहार–

दोस्तो, दीवाली पर तुम्हें अपने माता–पिता से ढेरों उपहार मिलते होंगे। रिश्तेदारों को उपहार देने के लिए उनके साथ तुम भी जाते होगे। लेकिन क्या कभी तुमने अपने दोस्तों या परिवार के लोगों को अपने बल पर दीवाली के मौके पर उपहार दिए हैं ? तुम सोच रहे होगे कि तुम यह कैसे कर सकते हो। थोड़ी–सी मेहनत और अपनी क्रिएटिविटी से तुम भी अपने दोस्तों और परिवार के सदस्यों का दीवाली के मौके पर उपहार देकर उनसे वाहवाही लूट सकते हो। इसके लिए तुम्हें ज्यादा खर्च भी नहीं करना पड़ेगा। उपलब्ध साधारण सामान को अपनी कल्पना का जामा पहनाकर ऐसी कई बेमिसाल चीजें बना कर उपहार में दे सकते हो जो उन्हें अचंभित कर देंगी।

वंदनवार या तोरण–

घर के दरवाजे पर लटकाए जाने वाले तोरण बना सकते हो जिसके लिए तुम हैंडमेड पेपर, मोतियों, ऊन, घंटियों, लक्ष्मी–गणेश की छोटी–छोटी मूर्तियों, रिबन, मोली, प्लास्टिक के पाइप, आम के पत्तों, रंग–बिरंगे फूलों जैसी चीजों का इस्तेमाल कर सकते हो। दोस्तो, आजकल शादियों का मौसम है और तुम्हारे घर में भी कार्ड आए होंगे, उनमें

बने लक्ष्मी–गणेश की फोटो के कटआउट काटकर वंदनवार तैयार कर सकते हो।

रंगोली डिजाइन–

दीवाली के मौके पर घर में रंगोली बनाने की परंपरा काफी पुरानी है। लेकिन रंगोली बनाना सबके बस की बात नहीं है। अगर तुम्हारी ड्रांइग अच्छी है, तो तुम पेस्टल शीट, हार्डबोर्ड या हैंडमेड पेपर पर रंगोली डिजाइन बनाकर एक्रेलिक पोस्टर कलर और ग्लिटर से पेंट कर लो। चाहो तो रंगोली के डिजाइन को सफाई से काटकर अपने दोस्तों या रिश्तेदारों को उपहार दे सकते हो। इसे देख कर वे तारीफ किए बिना नहीं रहेंगे।

सजावटी वस्तुएँ–

दोस्तो क्ले मॉडलिंग किट से तुम स्कलपचर, वॉल पेंटिंग, वॉस, स्टीकर जैसी कई सजावटी चीजें आसानी से बना सकते हो। इन्हें अपनी कल्पना के रंग से रंग कर आकर्षक बना सकते हो। दीवाली के मौके पर ये सजावटी चीजें अपने दोस्तों या मम्मी–पापा को दे सकते हो। तुम झूमर, विंड शाइन, कंदील, फूल, फ्लोटिंग लोटस जैसी सजावटी चीजें बनाकर सबको आश्चर्य में डाल सकते हो। इसके लिए तुम्हें चाहिए क्रिस्टल कांच या प्लास्टिक के मोती, रंगीन पेपर, रबर और प्लास्टिक की पतली शीट, रंगीन कपड़े, तारें ग्लिटर जैसी चीजें। ये चीजें बनाने में तुम्हें खुद भी बड़ा मजा आएगा और दूसरों को ये सजावटी चीजें जरूर पसंद आएँगी। रंगीन पेपर को काट कर तुम फ्रिल, लैंप शेड जैसी चीजें बना सकते हो।

डिजाइनर दीये और मोमबत्तियाँ–

दोस्तों दीवाली के मौके पर तुम खुद भी डिजाइनर दीये और मोमबत्तियाँ बना सकते हो। बाजार में मिलने वाले मिट्टी के साधारण दीयों को तुम वॉटर या एक्रेलिक पेंट करके सितारों, मोतियों, शीशे से सजा सकते हो। तुम चाहो तो बड़ी–बड़ी सीपियों, शंखों, अंडे तथा नारियल के आधे सर्कल में टूटे और पूरी तरह सूखे छिलकों, नमक मिले आटे की लोई से भी दीये बना सकते हो। इन्हें बाती और पिघली पैराफीन वैक्स डाल कर दीये का रूप दे सकते हो। तुम इन दीयों को पेंट कर डिजाइनर लुक दे सकते हो। ऐसे दीये जिन्हें भी तुम उपहार में दोगे वो इन्हें सराहे बिना नहीं रहेंगे।

पैराफीन वैक्स और वैक्स कलर मिलाकर कई डिजाइनर कैंडल्स भी बना सकते हो। तुम चाहो तो इनमें परफ्यूम की कुछ बूंदें मिला कर सुगंधित कैंडल बना सकते हो।

कांच के खाली जार को तुम आकर्षक लालटेन का रूप दे सकते हो। इसके लिए ग्लिटर और ग्लास पेंट से जार को पेंट कर लें। तुम्हारे दोस्त या रिश्तेदार ऐसी आकर्षक लालटेन में अंदर रखे डिजाइनर दीये या मोमबत्ती जलाने पर उसकी तारीफ किए बिना नहीं रहेंगे। इसी तरह बाजार में मिलने वाले साधारण ग्लास के वॉस को तुम रंगों से अपनी कल्पना का जामा पहना कर उसकी खूबसूरती में चार चांद लगा सकते हो।

■■■

पहेलियाँ

सुधा दुबे

(1)
काँटों के झुरमुट में रहकर
बड़े मौज से पलता हूँ।
खट्टा–मीठा स्वाद लिये मैं
खूब झमा–झम गिरता हूँ।।

(2)
मैं पत्तों में छुपकर रहता
निडर खड़ा खेतों में रहता
बरखा में सब मुझे दुलारें,
दाँत दिखाकर मैं भरमाता।।

(3)
गीष्म ऋतु का मैं हूँ राजा,
कच्चा रहकर स्वाद बढ़ाता।
पकने पर रस से भर जाता
बालवृंद को मैं ललचाता।।

(4)
एक बार में बारह का मेला
पेड़ पर लटका उल्टा चेला
कभी रहता नहीं अकेला
मुँह में स्वाद लगे अलबेला

■■■

सही उत्तर–
1. बेर, 2. भुट्टा, 3. आम, 4. केला

नारियल पानी

संदीप पांडे 'शिष्य'

''अरे, वाह, चेन्नई आ गया। हम आ गये।'' अमन और चमन ताली बजाकर खुश हो रहे थे। रेलगाड़ी रुकी तो दादाजी ने उनसे कहा कि चलो आराम से उतर जाओ और नीचे उतरकर पहले यह ताजा ताजा ताकत देने वाला नारियल पानी पी लो।, ''वाह दादाजी नारियल पानी। वाह वाह।'' दोनों खुश हो गये। दादाजी यहाँ तो हर जगह ही नारियल पानी बिक रहा है। ''अरे, तो चेन्नई समुद्र तट पर बसा है ना और नारियल तो दक्षिण भारत का मुख्य फल है। साथ ही यहाँ एक दिन में लगभग एक करोड़ से भी अधिक कच्चे नारियल तोड़े जाते है।'' अरे, बाप रे एक करोड नारियल। दादाजी, सच ?

''अरे, हाँ शायद आज इससे भी अधिक। दो करोड़ से भी ज्यादा पेड़ तो अकेले सिर्फ केरल में ही पाए जाते हैं। पूरे विश्व भर में नारियल का पेड़ देखने को मिल जाता है। और बच्चो, इस कच्चे नारियल का पानी सुस्वादु और स्फूर्तिदायक होता है। गरमी के दिनों में प्यास बुझाने के लिए लोग इस पानी को बड़े चाव से पीते हैं।''

दादाजी हँसते हुए बोले कि बच्चो, यह जो नारियल का पेड़ है ना, यह लगभग सौ वर्षों तक जीवित रहता है। और इस पौधे को पेड़ बनने में चार साल लगते हैं पर दस बारह वर्षों के बाद ही पेड़ में फल लगते हैं।

पेड़ साठ फुट से सौ फुट तक ऊँचा होता है और उसका धड़ बेलनाकार दो फुट तक या मोटा हो सकता है।

पेड़ के शिखर पर सुंदर पिच्छाकार, बीस फुट तक लंबे पत्ते होते हैं। दस से बारह नारियल एक साथ होते हैं।

नारियल के वृक्ष भारत में प्रमुख रूप से केरल, पश्चिम बंगाल और उड़ीसा में खूब उगते हैं। महाराष्ट्र में मुंबई तथा तटीय क्षेत्रों व गोआ में भी इसकी उपज होती है। नारियल एक बेहद उपयोगी फल है। इसके पके फल को सुखाकर इससे तेल बनाया जाता है। नारियल का तेल लगाने से बालों का रंग काला बना रहता है और बाल कम झड़ते हैं। नारियल को बहुत ही शुभ माना जाता है। खास तौर पर इसकी मान्यता सबसे अधिक भारत में पाई जाती है क्योंकि कोई भी शुभ काम करने से पहले नारियल फोड़ा जाता है जो कि भगवान शिव का प्रतीक भी होता है।

इसके वृक्ष के बहुत फायदे होते हैं। इस वृक्ष के हर हिस्से को उपयोग लिया जा सकता है। इस पेड़ की लकड़ी से कई प्रकार के फर्नीचर, नाव, कागज, मकान इत्यादि बनाए जाते हैं। इसके पत्तों का इस्तेमाल छतों को ढकने के लिए किया जाता है।

इसके तेल में खाना बनाने से यह बहुत ही फायदेमंद साबित होता है। इसके साथ-साथ नारियल के तेल को त्वचा पर लगाया जाता है, क्योंकि है त्वचा को मुलायम और बहुत ही चमकदार बनाता है। इससे जले हुए के घाव भी ठीक हो जाते हैं। नारियल का तेल बालों में भी लगाया जाता है। इससे बाल लंबे काले और घने होते हैं और जड़ें भी मजबूत होती हैं। वाह दादाजी मजा आ गया। लो एक और पी लो कहकर दादाजी भी दूसरा नारियल पानी पीने लगे। रेलवे स्टेशन से बाहर निकलते हुए दादाजी बोले कि बच्चो, नारियल का पानी पीने से बहुत ही चुस्ती आती है। शरीर ताजा बना रहता है। नारियल के पेड़ से कई सारी चीजें भी बनाई जाती हैं। चटाई, बॉक्स, दरी, झाड़ू इत्यादि बनाए जाते हैं। नारियल की चटनी भी बनाई जाती है, जो कि बहुत ही स्वादिष्ट होती है। इसे डोसा और मिठाइयों के साथ काम लिया जाता है।

■■■

पिताजी की सीख

ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

मेरे पिता, जनाब अब्दुल पाकिर जैनुल नदीम ने मुझे जब मैं बच्चा था, एक अच्छा पाठ पढ़ाया था। देश को अभी–अभी आजादी मिली थी। उस समय तटीय तमिलनाडु में मेरे गाँव रामेश्वरम् में पंचायत का चुनाव हुआ। उसी दिन पिताजी नगर संघ

के अध्यक्ष बनाए गए। रामेश्वरम् तब तीस हजार की आबादी वाला खूबसूरत–सी जगह था। अगर पिताजी पंचायत बोर्ड के अध्यक्ष चुने जाते तो इसलिये नहीं कि वे एक खास समुदाय से थे या खास भाषा बोलते थे या खास आर्थिक वर्ग के थे। वे चुने गए तो अपनी महानता के कारण, एक नेक इंसान होने के कारण। जिस दिन वे पंचायत बोर्ड के अध्यक्ष चुने गये, उस दिन की एक घटना बताना चाहूँगा।

उस समय मैं स्कूल में पढ़ता था। उन दिनों बिजली नहीं थी। हमलोग घर राशन में मिले किरासन तेल से लैंप जलाकर पढ़ा करते। मैं पाठ को जोर–जोर से पढ़ता। एक रात दरवाजे पर दस्तक हुई। उन दिनों रामेश्वरम में कोई किवाड़ बंद करके नहीं रहता। किसी ने दरवाजा खोला, अंदर प्रवेश कर पूछा– तुम्हारे पिताजी कहाँ हैं। मैंने बताया वे शाम की नमाज अदा करने गए हैं। इस पर उसने कहा– मैं उनके लिए कुछ लाया हूँ। क्या तुम इसे रख सकते हो ? मैंने पुकार कर माँ को बुलाया, ताकि उसके कहने पर ही वह सामान रख लूँ। पर माँ भी भीतर नमाज अदा कर रही थी। अंत में मैंने आगंतुक से कहा कि सामान खाट पर छोड़ जाए। फिर मैं पढ़ने लगा, यानी जोर–जोर से, ध्यान लगाकर।

शीघ्र ही पिता जी लौटे। उन्होंने खाट पर प्लेट रखा देखा– ''यह क्या है ?'' उन्होंने मुझसे पूछा, ''इसे किसने दिया है ?'' मैंने बताया कि कोई आए थे और आपके लिए रख गए हैं।

उन्होंने प्लेट पर का कागज हटाया। देखा नीच अंगवस्त्रम था। साथ में कुछ फल और मिठाइयाँ और पर्ची भी था। यह सब देख पिताजी उद्विग्न हो गए। जीवन में पहली बार उन्हें क्रोध करते देखा। पहली बार ही था। जब पिताजी से खूब पिटाई हुई। मैं डरकर रोने लगा। माँ आ गई, मुझे कलेजे से लगाकर, सांत्वना देने लगी। इस पर पिताजी करीब आए और मेरा कंधा छुआ स्नेह से। बोले कि मेरी अनुमति के बिना किसी से भी उपहार न लेना।

उन्होंने एक इस्लामी हदीथ का हवाला दिया– ''जब अल्लाह किसी को किसी पद पर बिठाता है, तो वह उसका प्रबंध भी करता था। कोई भी इससे अधिक ले, तो वह गैर–कानूनी है।''

फिर उन्होंने मुझे बताया कि उपहार लेना अच्छी आदत नहीं। क्योंकि उनका कोई–न–कोई मकसद होता है। और इस तरह वह खतरनाक होता है। ''यह सांप को छूने और उससे डंस जाने के समान है।''

यह एक सबक अभी भी मुझे याद है। मैं सत्तर बरस को हो चला हूँ। उस पुरानी घटना ने मुझे जीवन भर के लिए सबक सिखा दिया। वह मेरे दिमाग में बैठ गया। आज भी को व्यक्ति कोई उपहार लिए मेरे सामने आता है, तो मैं कांप उठता हूँ।

■■■

चुटकुले

शिक्षक – समाधान किसे कहते हैं ?

छात्र – चावल को।

शिक्षक – वह कैसे ?

छात्र – जो धान में समा जाए उसे समाधान कहते हैं।

*** *** ***

पिता – आज तो मिस कॉल से जल्दी कैसे वापस आ गए ?

पुत्र – सर ने पूछा ताजमहल कहाँ है मैंने नहीं बताया तो उन्होंने स्कूल से निकाल दिया।

पिता – मैंने कितनी बार कहा अपनी चीजें संभाल कर रखा करो।

*** *** ***

बबलू – या कौन सी मिठाई है ?

दुकानदार – खाजा। (बबलू खा गया)

दुकानदार – पैसे लाओ

बबलू – कैसे पैसे ? आपने कहा खाजा तो मैं खा गया।

*** *** ***

बबलू जेबरा क्रॉसिंग की सफेद और काली पट्टी पर इधर–उधर चल रहा था।

ट्रैफिक पुलिस – यह क्या कर रहे हो ?

बबलू – अंकल, यह पियानो बज की नहीं रहा है।

*** *** ***

बबली सुबह–सुबह कटोरी चम्मच लेकर बाहर जा रही थी उसकी माँ ने कहा–अरे बबली कहाँ जा रही हो ?

बबली– मेरी टीचर ने कहा है कि रोज सुबह उठकर ताजी हवा खानी चाहिए।

*** *** ***

एक आदमी खड़े–खड़े चाबी से अपना कान खुजा रहा था।

दूसरा व्यक्ति गौर से उसे देखते हुए बोला – भाई साहब, अगर स्टार्ट नहीं हो रहा तो धक्का लगाऊँ।

*** *** ***

शिक्षक – आज स्कूल लेट से क्यों आए ?

बबलू – सर, मैंने आज एक नेक काम किया है।

शिक्षक – कौन–सा नेक काम ?

बबलू – आज मैंने एक बुढ़िया सड़क पार करवाया।

शिक्षक – लेकिन एक बुढ़िया को सड़क पार कराने में इतना समय ?

बबलू – सर, पर वह बुढ़िया सड़क पार ही नहीं करना चाहती थी।

*** *** ***

बेटा – पापा, मुझे ढोल खरीद दो ना।

पापा – नहीं, तुम ढोल बजा कर मुझे तंग किया करोगे।

बेटा – नहीं पापा, मैं तो उसे तब बजाऊँगा जब आप सो जाया करेंगे।

■■■

शिक्षक दिवस

आया शिक्षक दिवस करें हम,
गुरुओं का सम्मान।
खुब लगाएँ मन पढ़ने में,
लें लें सारा ज्ञान।
जो कुछ वे कहते हम समझते,
सुने लगाकर ध्यान।
बिना गुरु के मिले कभी न,
उत्तम विद्या दान।
ईश्वर के रूप से है अनुपम,
सभी गुनो की खान।
अपना सब कुछ कर दे अर्पण,
शिष्यों का रखे ध्यान।

बापू

साबरमती की हैं संतान
इन्हीं सा महका सारा हिन्दुस्तान
आजादी दिलाकर दे दी अपनी जान
देसी सामानों को दिलाया सम्मान
बापू हमारे हैं महान
सच्चाई की राह दिखाई
अहिंसा की पाठ पढ़ाई
आजादी के लिए लड़ी लड़ाई
दुश्मनों पे न की चढ़ाई
बापू हमारे है महान
जिसने सबको मानवता का संदेश दिया
डांडी पर जाकर अपना हाथ नमक बनाया
सब कुछ वतन के नाम में लुटा दिया
खुद जहर पिया सबको अमृत दिया
बापू हमारे है महान।

अक्स नाज, कक्षा–9
विद्यालय– पिकु पब्लिक स्कूल, किशनगंज

किलकारी चले

चलो चले किलकारी चले,
खुशियां की फुलवारी चले।
जहाँ खिलते है सबके चेहरे,
जहाँ न मिलते दुःख के पहरे।
यहाँ न होता अत्याचार,
होता है अच्छा व्यवहार।
तन-मन से होता सम्मान,
चाहे आए कोई इंसान।
फूलों की सुंदर बगीया में,
जिस पर बैठी तितली रानी।
पीती है जीवन का पानी।
यहाँ झूलों का है भंडार,
मस्ती का हर द्वार।
सीखे लेखन, सीखे नाटक,
इधर संगीता दी, उधर सर पाठक।
करे ड्रामा, पहन पजामा,
नन्हें बच्चे बनके मामा।
दोस्तो का बना संसार,
बच्चों से है भरा भंडार।
मस्ती की आँगन है सजती,
सजती किलकारी की बसती।
किलकारी है कितनी प्यारी,
पुस्तकालय भी है बड़ी न्यारी।
बच्चे लाये खेले गाए,
मस्ती में हुड़दंग मचाए।

चिन्टू कुमार
बी.बी.के. 0419

याददाश्त

याददाश्त आजकल हो गई कमजोर है
लगता है जैसे आया कोई चोर है।

बैठता हूँ जो किताब ले पढ़ने
भूल जाता हूँ क्या आया था करने।

मम्मी तो कहा– 'ले के आजा आटा'
भू गया मैं और ले आया बटाटा।

ले आया बटाटा, मम्मी ने मुझे डाँटा
मुँह लगाया और खा गया चाटा।

माँ ने कहा जब देखो मोबाइल
हुआ बंद कैसे भूलने का फाइल।

गणपत हिमांशु

उपकार

गुरुओं के उपकार
मैं कैसे भुला दूँ
आशीष से उनके
उजाले में खड़ा हूँ

कभी डाँटा, कभी फटकारा
कभी रुलाया, कभी हँसाया

मुश्किल राहों को भी
अपने स्नेह से गुरु
आपने सरल बनाया

मुसीबत से घबराना नहीं
संघर्ष करना आपने सिखाय
लक्ष्य के प्रति जोश जगाया
जीवन बस यूँ ही जीना नहीं
जीवन का महत्व आपने बताया

जल्दी करो, खड़े हो जाओ
यह कहकर हमेशा आपने
मुझे अनुशासित बनाया
कदम-कदम पर जिम्मेदारी देकर
आपने मुझे जिम्मेदार बनाया

सफलताओं पर शाबाशी देकर
आपने मेरा आत्मविश्वास बढ़ाया
आज क्रोधित होकर आपने
मेरा कल का भविष्य बनाया

गुरु के उपकार को
मैं कैसे भुला दूँ
उन्हीं के आशीष से
आज मैं यहाँ हूँ

पूजा

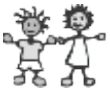

भालू जी

विज्ञान व्रत

अक्कड़–बक्कड़ इल्ली–गिल्ली
भालू जी जा पहुँचे दिल्ली

दिल्ली में था लाल किला
वहाँ रक्खी थी एक शिला

भालू जी ने उसे उठाया
सब बच्चों को खूब हँसाया

अक्कड़–बक्कड़ पान का पत्ता
भालू जी पहुँचे कलकत्ता

स्टेशन पर था खाली रिक्शा
पता नहीं था जाने किसका

भालू जी ने उसे चलाया
हमको कलकत्ता दिखलाया

हक्कड़–बक्कड़ धानी घास
भालू जी पहुँचे मद्रास

चीजों के थे ऊँचे रेट
लगे खेलने वो क्रिकेट

तभी वहाँ पर हाथी आया
भालू जी ने नाच दिखाया

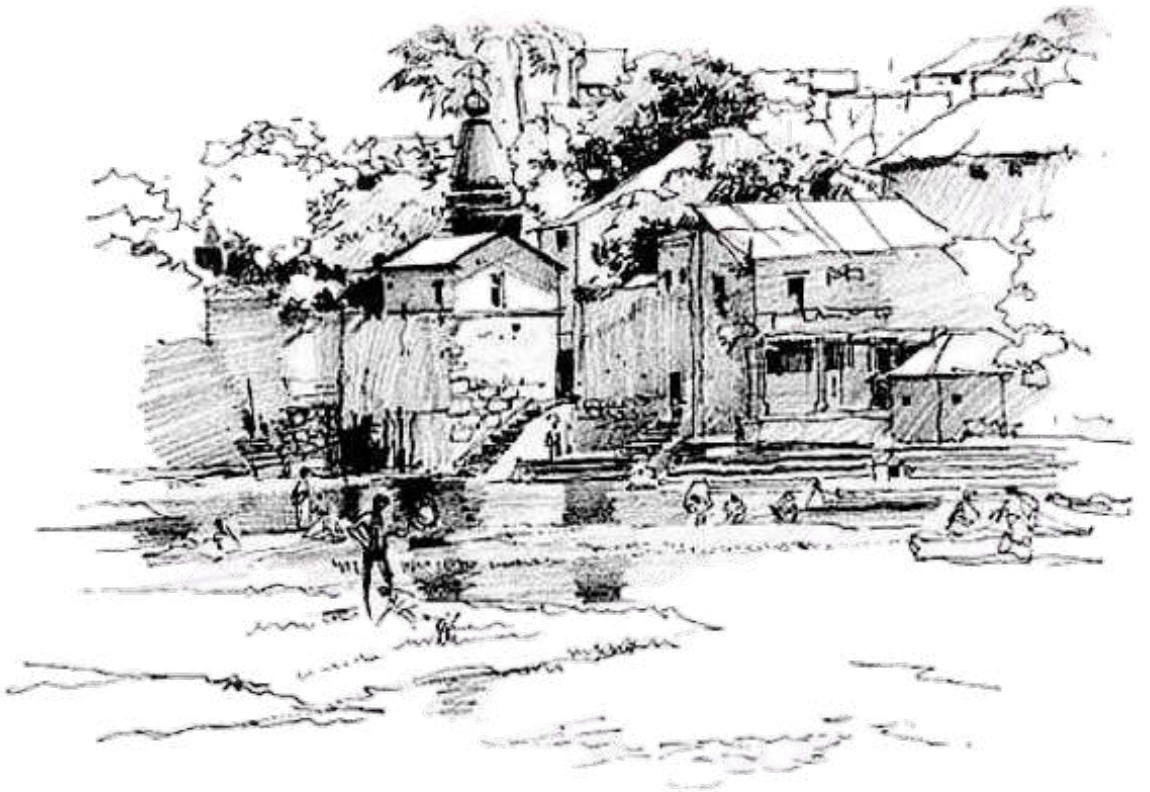

गाँव हमारा

नरेन्द्र सिंह निहाल

नगरों की जद से दूर-सुदूर,
अभी हैं गाँव हमारा।
पगडंडी पर चले बटोही,
निर्मल जल की धारा।

हरे-भरे तालाब यहाँ हैं,
मुस्काती सी फसलें।
साफ-शुध्द हवा के झोंके,
सीधी-सादी नस्लें।

जुम्मन चाचा अभी सिले हैं,
राम रतन की टोपी।
सुखिया चाची गूँथ रही है,
सलमा बी की चोटी।
साझे सब त्योहार अभी तक,
खुशियों से भर देते।
शादी, हारी और बीमारी,
नेग शगुन सब देते।

एक हाँक पर जुट जाता,
पूरा गाँव हमारा ।
हमको कोई बाँट न पाये,
बहे प्रेम की धारा।।

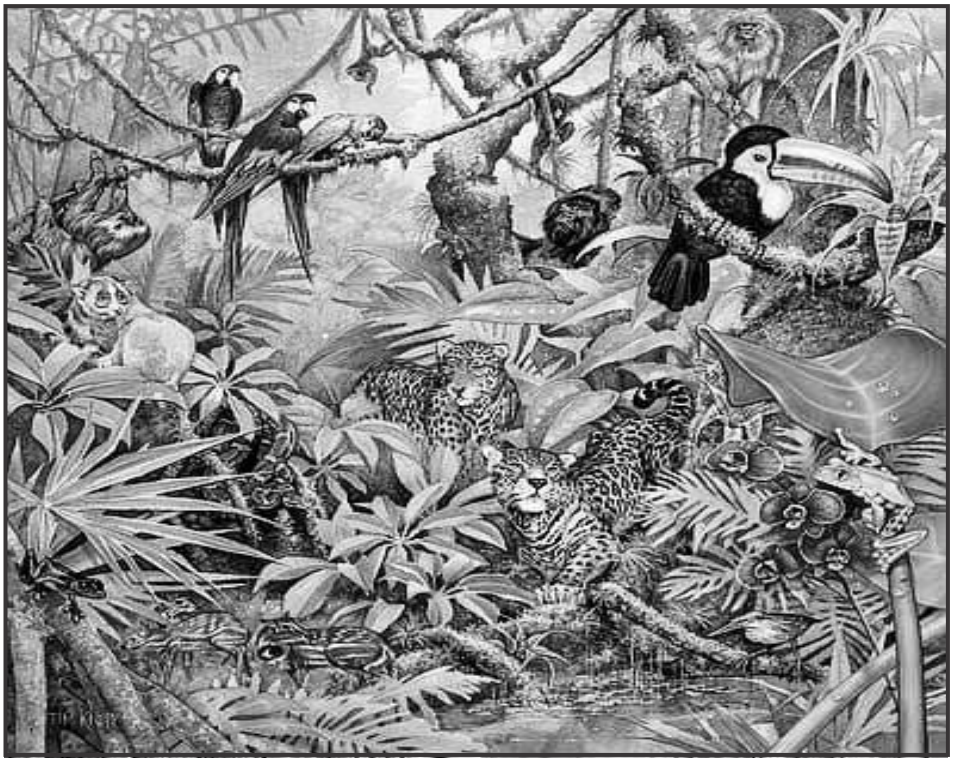

जंगल गीत

महेंद्र कुमार वर्मा

जंगल का हर पेड़ सुहाता,
जंगल में हर पक्षी गाता,
जंगल में बहार जब आती,
जंगल फूलों से लद जाता।

सर सर पत्ते मौज मनाते,
सुरभित पवन मगन इठलाते,
हरियल तोता सबको भाता,
कोयल बुलबुल गीत सुनाते।

गीदड़ भालू शेर गधे जी,
जंगल में सब मस्ती करते,
नटखट बन्दर खेल कूद के,
जंगल को खुशियाँ से भरते।

प्रातः पंछी खुश हो गाते,
सबके मन में खुशी जगाते,
शेर दहाड़े गदहा रेंके,
जंगल में सब मौज मनाते।

चंदा रे चकोरे

पूजा भारद्वाज

चंदा रे चकोरे,
कैसे इतने गोरे,
क्या दूध मलाई खाते हो,
रोज नहीं क्यूँ आते हो,
कहाँ जाकर छुप जाते हो,
मामा के, मौसी के,
या बुआ के घर जाते हो,
कभी छोटे कभी बड़े,
कैसे तुम बन पाते हो,
हमें सिखाओ जादू ये,
गायब जो हो जाते हो,
चमक चमक के तारों संग,
उजियारा फैलाते हो,
आसमान के राजा तुम,
देखो कितने भोले,
चंदा रे चकोरे,
कैसे इतने गोरे।।

रात हुई आ जाते हो,
भोर हुई सो जाते हो,
रंग कभी नारंगी सा,
कभी चाँदी–सा बिखराते हो,
सुना है मैंने दादी से,
पुए चूर के खाते हो,
शिव बाबा के मस्तक पर,
बैठ बैठ इठलाते हो,
अजब पहेली चंदा तुम,
कैसे तुमको बूझे,
चंदा रे चकोरे,
कैसे इतने गोरे।।

आंटी का पर्स

आशा शर्मा

आज तो मिंटी का दिन ही बन गया। हुआ ये कि वह दोपहर में अपनी दादी के साथ पड़ोस वाली सीमा आंटी के घर गई थी। दादी और आंटी चाय पीते हुए आपस में बतिया रही थी और मिंटी वहीं पास में ही बैठी उनकी बिल्ली के बच्चे के साथ खेल रही थी। बिल्ली का बच्चा इधर-उधर भाग रहा और मिंटी उसके पीछे-पीछे। खेलते-खेलते बिल्ली का बच्चा सीमा आंटी के पलंग के नीचे जाकर छिप गया।

मिंटी भी जमीन पर लेटकर उसे बाहर निकालने की कोशिश करने लगी तभी उसकी नजर पलंग के नीचे पड़े एक पर्स पर पड़ी. मिंटी ने एक पल सोचा और फिर पर्स उठा

कर अपनी बगल में दबा लिया।

अब उसे घर जाने की जल्दी हो रही थी. वह देखना चाहती थी कि उस पर्स में क्या है। वह दादी से चलने की जिद करने लगी।

''इतनी जल्दी क्या है मिंटी ? अभी तो आई हो।'' आंटी ने कहा लेकिन मिंटी ने पढ़ाई का बहाना बनाया तो आंटी भी मना नहीं कर सकी।

घर पहुँचते ही मिंटी सीधे अपने कमरे में गई। बाथरूम में जाकर उसने कुंडी लगा ली और काँपते हाथों से पर्स खोलकर देखने लगी।

पर्स खोलते ही सीमा आंटी का पहचान पत्र मिंटी के हाथ में आया। मिंटी डर गई। उसे लगा मानो आंटी उसे घूर-घूरकर देख रही हैं। मिंटी ने घबराकर वह पहचान पत्र तुरन्त वापस पर्स में डाल दिया।

पहचान पत्र के अलावा उसमें बैंक का एटीएम कार्ड और एक ड्राइविंग लाइसेंस भी था। इन सब पर भी सीमा आंटी का नाम ही लिखा हुआ था।

वह पर्स को और टटोलने लगी। अचानक उसकी आँखें आश्चर्य से चौड़ी हो गई जब दो हजार के कुछ गुलाबी नोट उसके हाथ में आ गए। अभी वह देख ही रही थी कि माँ ने आवाज लगाई। माँ की आवाज सुनकर मिंटी ने फटाफट वह पर्स बाथरूम में छिपा दिया और बाहर आ गई।

मिंटी को रात भर नींद नहीं आई। सुबह उठते ही वह नहाने का बहाना बनाकर फिर से बाथरूम में घुस गई और नहाने की बजाय नोट गिनने की कोशिश करने लगी।

''मिंटी! कितनी देर लगाओगी बाथरूम में ? स्कूल का समय हो रहा है।'' माँ की आवाज सुनकर मिंटी ने वो नोट वापस पर्स में ठूंस दिये और झूठमूठ नहाने का दिखावा करती, अपने बाल गीले करके बाथरूम से बाहर निकल आई।

मिंटी स्कूल चली गई लेकिन उसका ध्यान तो अब भी उसी पर्स में लगा हुआ था। 'पाँच-सात नोट तो अवश्य ही होंगे।' सोचते हुए मिंटी ने हिसाब लगाया।

''इतने रुपयों से तो बहुत कुछ खरीदा जा सकता है। खिलौने, कपड़े, मिठाई, जूते... कुछ भी। लेकिन मैं अकेली कहाँ कुछ भी खरीद सकती हूँ। मम्मी-पापा या दादी को बताऊंगी तो वे मुझसे बहुत से सवाल पूछेंगे और सच्चाई पता चलने पर वो पर्स लौटने को कहेंगे। डांट पड़ेगी सो अलग। मार भी लग सकती है।''

घर आकर भी मिंटी लगातार पर्स और उन रुपयों के बारे में ही सोच रही थी। तभी उसे सीमा आंटी की आवाज सुनाई दी। वे दादी से अपने पर्स का जिक्र कर रही थी।

''जरूर तुम्हारी काम वाली बाई ने उठा लिया होगा। तुम पुलिस में रिपोर्ट लिखवा दो और काम वाली को काम से निकाल दो।'' दादी उन्हें सलाह दे रही थी। मिंटी को काम वाली बाई के लिए बहुत बुरा लग रहा था। बेचारी को मिंटी की गलती की सजा मिलने वाली थी। मिंटी उदास हो गई।

स्कूल में भी मिन्नी का मन पढ़ाई में नहीं लग रहा था। तभी हिंदी की टीचर क्लास में आई। उन्होंने बुक खोलते हुए कहा- ''बच्चों! आज मैं आपको हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी की आत्मकथा के बारे में

बताने वाली हूँ। इसका नाम है 'सत्य के प्रयोग।' गाँधी जी हमेशा सच बोलने पर जोर देते थे। वे ऐसा कोई काम नहीं करते थे जिससे उनका मन उन्हें अपराधी माने।'' टीचर के इतना कहते ही मिंटी का सारा ध्यान टीचर की बातों पर चला गया। पर्स को लेकर उसका मन भी तो कहीं न कहीं उसे अपराधी मान रहा था। यदि ऐसा न होता तो वह पर्स को छिपाकर क्यों लाती? वहीं दादी को न थमा देती?

'गाँधी जी ने बचपन में एक बार अपने घर में चोरी की थी। बाद में उन्हें बहुत पछतावा हुआ लेकिन अपनी गलती स्वीकार करने में उन्हें बहुत डर लग रहा था इसलिए उन्होंने पत्र लिखकर अपने पिता से माफी मांगी। पिता ने उनकी सच्चाई का सम्मान करते हुए उन्हें माफ कर दिया।' कहते हुए टीचर ने पाठ पूरा किया।

''इसका मतलब गाँधी जी भी हमारी तरह गलतियाँ करते थे?'' मिंटी ने आश्चर्य से पूछा।–

''हाँ बच्चो, गाँधी जी भी बचपन में आप लोगों की तरह ही तो थे। एक बार तो उन्हें बीड़ी पीने की बुरी लत भी लग गई थी। अपनी गलती पर पश्चाताप करने के लिए उन्होंने आत्महत्या तक करने की कोशिश की। एक बार उन्होंने छिपकर मांस खाया और शराब भी पी लेकिन ये सब करने के बाद उन्होंने अपनी गलती मानी भी और उन्हें सुधारा भी।'' टीचर ने बताया तो सबकी आंखें आश्चर्य से फैल गई।

''गाँधी जी ने अपनी आत्मकथा में बताया है कि गलती करना बुरी बात नहीं है। बस, हमें अपनी गलती को स्वीकार करके उसे सुधारने का प्रयास करना चाहिए।' टीचर ने मुस्कुराते हुए कहा।

''तो क्या मुझे भी अपनी गलती मान लेनी चाहिए? सॉरी बोलकर आंटी का पर्स वापस कर देना चाहिए?''

मिंटी लगातार सोच रही थी। फिर उसने कुछ तय कर लिया। शाम को वह दादी के पास गई और चुपचाप खड़ी हो गई।

''क्या हुआ? कुछ चाहिए क्या?'' दादी ने प्यार से पूछा तो मिंटी ने एक पत्र उनके हाथ में रख दिया। दादी उसे हैरानी से देख रही थी। उन्होंने वह पत्र खोलकर पढ़ा तो सारी बात समझ में आ गई। उन्होंने मिंटी की तरफ देखा। मिंटी ने आंटी का पर्स लाकर चुपचाप उनके हाथ में रख दिया। अब उसकी आँख में आँसू भी थे। दादी ने मिंटी को उसकी गलती के लिए डांटा नहीं बल्कि प्यार से समझाया।

''दादी, आपने मुझे डांटा नहीं? मैं तो डर रही थी कि आप मुझे मारेंगी भी।'' मिंटी को दादी के व्यवहार से आश्चर्य हो रहा था।

''अक्सर इसी डांट के डर से बच्चे अपनी गलतियाँ छिपाते रहते हैं और आगे चलकर बड़ी गलतियाँ करते चले जाते हैं। लेकिन डांट के डर से सच बोलने से डरना नहीं चाहिए। मार के डर से भी नहीं। समझी?''

दादी ने मिंटी को प्यार से अपनी तरफ खींचा तो मिंटी ने अपने आँसू पोंछते हुए हामी में अपना सिर हिलाया।

अब दोनों मुस्कुराती हुई सीमा आंटी का पर्स उन्हें लौटने के लिए चल दी।

■■■

कहानी

लकड़हारे की गुरुभक्ति

पुष्पेश कुमार पुष्प

तानसेन अकबर के दरबार में गायक के पद पर नियुक्त होते ही घमंडी हो गये। वह अपने आगे हर किसी को तुच्छ समझने लगे। यहाँ तक कि अपने गुरु हरिदास को भी मान-सम्मान नहीं देते थे। यह देखकर स्वामी हरिदास को बहुत दुख होता। स्वामी हरिदास के ही एक शिष्य बैजू बाबरे ने तानसेन के अहंकार को चकनाचूर कर दिया। बैजू बाबरे ने गायकी में तानसेन को मात दे दी। अब तानसेन की आँखें खुल गयीं और उन्हें अपनी गलती का एहसास हो गया। वे अपने गुरु के चरणों में गिरकर क्षमा याचना करने लगे। स्वामी जी ने उनके सिर पर हाथ रखते हुए कहा– "तानसेन! तुम्हें अपनी गलती का एहसास हो गया है। इसलिए अब तुम तीर्थ यात्रा कर आओ। इससे तुम्हारे हृदय की मलिनता दूर होगी और तुम्हारा हृदय स्वच्छ व निर्मल हो जाएगा।"

तानसेन गुरु के आदेशानुसार अकबर से आज्ञा लेकर तीर्थ यात्रा पर निकल गये।

चलते-चलते वह वीरान और घनघोर जंगल में पहुँच गये। वहाँ उन्होंने एक तालाब के किनारे अपना डेरा डाला। रात में सोने के पूर्व तानसेन ने तानपूरा मिलाया और टोडी- राग के स्वर अलापने लगे। राग का प्रभाव बढ़ता गया और जंगल के जीव-जंतु आकर उनके पास बैठने लगे। भूला-भटका एक लकड़हारा भी वहाँ आकर बैठ गया। सभी जीव-जंतु आनंदविभोर होकर अपना सुध-बुध खो बैठे।

उनके गायन खत्म होते ही सारे जीव-जंतु अपने ठिकाने की ओर चल दिये, किंतु वह लकड़हारा वहीं बैठा रहा। फटे-पुराने वस्त्रों में लिपटा, हाथ में कुल्हाड़ी लिए एकटक तानसेन को निहार रहा था। उसने हाथ जोड़कर तानसेन से विनीत स्वर में बोला कि वह उसे अपना शिष्य बना लें और संगीत की शिक्षा दें।

लकड़हारे की बात सुनकर तानसेन को हँसी आ गयी और बोले- "मूर्ख, तानसेन का शिष्य बनने के पूर्व तुमने अपनी औकात देखी है। मैं तुम्हें अपना शिष्य बनाकर संगीत कला का अपमान नहीं कर सकता! जाओ और लकड़ियाँ काटकर घर की रोजी-रोटी चला। संगीत कला सीखना तुम्हारे वश की बात नहीं हैं। संगीत कला सीखने की बात अपने मन से निकाल दें।"

लेकिन लकड़हारा कुछ भी सुनने को तैयार नहीं था। वह अपनी जिद पर अड़ा रहा। तानसेन ने उसे समझाते हुए कहा- "भाई, यह कला सिर्फ राजा-महाराजाओं का मन बहलाने के लिए है। गरीबों के लिए नहीं है। भरपेट भोजन मिलने पर ही गाना-बजाना सूझता है।"

फिर भी लकड़हारा अपनी जिद पर कायम रहा। अंत में तानसेन उसे संगीत कला सीखाने को राजी हो गये। लकड़हारे को सामने बिठाकर उन्होंने तानपूरा छेड़ा और सातों स्वरों का अभ्यास कराने लगे।

लकड़हारे ने काफी ध्यानपूर्वक संगीत कला के सातों स्वरों को कंठस्थ कर लिया। उसकी लगन देख तानसेन ने कहा- "सुनो संगीत में सात स्वर ही होते हैं। इसका प्रतिदिन अभ्यास करना, तुम्हें सफलता अवश्य मिलेगी।"

लकड़हारे ने प्रसन्न होकर तानसेन को गुरु दक्षिणा के रूप में दो टके (चार पैसे) और अपनी कुल्हाड़ी उनके चरणों में रख दी और हाथ जोड़कर कहा- "गुरुदेव! आप इस तुच्छ भेंट को स्वीकार करें। मैं यह तुच्छ भेंट आपको गुरु दक्षिणा स्वरूप भेंट कर रहा हूँ। कृप्या इसे स्वीकार कर मुझे कृतार्थ करें।"

तानसेन की आँखों में आँसू आ गये और सोचने लगे कि यह इंसान कितना बड़ा गुरुभक्त है, जो अपने गुरु के मान-सम्मान में अपनी समस्त पूँजी भेंट कर रहा है। इसे कल की भी चिंता नहीं है कि कल इसके परिवार को भोजन कहाँ से आएगा? एक निर्धन लकड़हारे के मन में गुरु के प्रति इतनी श्रद्धा और भक्ति! इसने तो गुरु भक्ति को आकाश की ऊँचाइयों पर पहुँचा दिया। ऐसी गुरुभक्ति तो मैंने आज तक नहीं देखी। उसकी गुरुभक्ति देखकर तानसेन सोचने

लगे कि उन्होंने अपने गुरु को क्या दिया? न मान-सम्मान और न कोई भेंट? इस लकड़हारे ने उनकी आंखें खोल दीं और वे पश्चाताप की अग्नि में जलने लगे। तानसेन की अंतरात्मा उन्हें धिक्कारने लगी।

तानसेन अपने आँसू को पोंछते हुए लकड़हारे से कहा- "आज तुमने मेरी आंखें खोल दी। गुरुभक्ति क्या होती है? यह तुमने सिखा दिया। मेरे अहंकार को तोड़ दिया। मैं तुम्हारी गुरुभक्ति से प्रसन्न हूँ। किंतु मैं तुम्हारी इन वस्तुओं को स्वीकार कर पाप का भागी नहीं बन सकता मेरी शुभकामना तुम्हारे साथ है। तुम्हें सफलता अवश्य मिलेगी।"

किंतु वह लकड़हारा गुरु दक्षिणा स्वीकार करने के लिए जिद करने लगा, तो तानसेन का हृदय पिघल गया। तानसेन लकड़हारे का भेट स्वीकार कर लिया। तानसेन भेंट स्वीकार कर रथ में सवार हो गये।

तीर्थ यात्रा से लौटकर जब तानसेन दरबार में आये तो अकबर ने पूछा- "क्यों तानसेन! कैसी रही तुम्हारी तीर्थ यात्रा? रास्ते में किसी संगीत कला के शौकीन से मुलाकात हुई?"

तानसेन ने कहा- "महाराज! क्षमादान दें तो निवेदन करूँ - इस धरती पर अधिकतर लोग संगीत का आनंद लेने के लिए उसे पैसों से खरीदना चाहते हैं। किंतु संगीत का सच्चा आनंद तो उसका साधक ही ले सकता है। इस तीर्थ यात्रा ने मेरी आँखें खोल दीं। मुझे अपनी गलती का अहसास हो गया। मुझे एक ऐसा व्यक्ति मिला जो इस संसार सबसे बड़ा दाता और धनवान था।"

यह सुनते ही अकबर का पारा सातवें आसमान पर चढ़ गया और बोला- "तानसेन! इस हिन्दुस्तान की धरती पर मुझसे बड़ा दाता और धनवान भला कौन हो सकता है? मैं उससे मिलना चाहता हूँ। यदि तुम्हारी बात गलत हुई, तो परिणाम बड़ा बुरा होगा।"

तानसेन अपने दुपट्टे में लपेटी हुई गुरु दक्षिणा निकालकर सबके सामने रख दी और कहा कि उस धनवान के शरीर पर फटे-पुराने वस्त्र थे। परिवार का पेट पालने के लिए एक कुल्हाड़ी एकमात्र साधन था। जंगल में लकड़ी काटकर अपना गुजर-बसर करता था। दिन भर की कमाई के ये चार पैसे और सारे जीवन की कमाई का साधन यह कुल्हाड़ी जो आपके सामने है, मेरे गायन सुनकर उसने गुरु दक्षिणा स्वरूप मुझे भेंट कर दिया। है कोई ऐसा माई का लाल जो अपने जीवन भर की कमाई का साधन तानसेन पर न्यौछावर कर दे?"

यह सुनकर सबके सिर शर्म से झुक गये। अकबर भी निरुत्तर हो गया। दरबार में सन्नाटा छा गया और तानसेन सबकी ओर अचरज भरी निगाहों से देखने लगे।

■■■

पिल्ला बना साथी

हरीश कुमार 'अमित'

नन्हा मोनू हर रोज सुबह के समय अपने दादाजी के साथ पार्क में सैर करने जाता था। एक दिन उसने देखा कि एक छोटा–सा भूरे रंग का पिल्ला उनदोनों के पीछे–पीछे आ रहा है. पिल्ले को देखकर मोनू डर गया। इस पर दादाजी ने कहा, ''बेटा, डरो मत। वह तुम्हें काट थोड़े ही रहा है।''

दादाजी की बात सुनकर मोनू का डर दूर हुआ। सैर करते हुए वह बीच–बीच में पीछे मुड़कर देखता रहा। पिल्ला उसी तरह

उनदोनों के पीछे–पीछे चल रहा था। जब वे पार्क से निकलकर घर जाने लगे, तो पिल्ला किसी दूसरी तरफ चल पड़ा।

उसके बाद तो हर सुबह पार्क में दादाजी और मोनू के पीछे–पीछे पिल्ले का चलना रोज की बात हो गई। पिल्ला बस उनदोनों के पीछे–पीछे चलता रहता था। कभी भौंकता भी नहीं था। दादाजी और मोनू, दोनों, को उस पिल्ले के अपने पीछे–पीछे चलने की आदत हो गई थी।

एक दिन जब दादाजी और मोनू पार्क में सैर कर रहे थे और वह भूरे रंग का पिल्ला उनदोनों के पीछे–पीछे चल रहा था कि तभी सामने से एक मोटा–तगड़ा बंदर आता दिखाई दिया। बंदर को देखते ही मोनू डर गया। दादाजी भी मोनू का हाथ पकड़ कर एक तरफ हट गए। मगर बंदर मोनू की तरफ बढ़ता चला आ रहा था। मोनू डर के मारे चीखने लगा।

''इधर–उधर भागना मत, मोनू! यहीं खड़े रहना, भागोगे तो बंदर जरूर काट लेगा।'' दादाजी ने मोनू को अपने साथ सटाते हुए कहा।

तभी वह भूरा पिल्ला बंदर को देखकर जोर–जोर से भौंकने लगा। बंदर जहाँ था, वहीं रुक गया। फिर भूरा पिल्ला गुर्राते हुए बंदर की तरफ लपका। इस पर वह बंदर वहाँ से भाग खड़ा हुआ। दादाजी और मोनू की जान में जान आई। वे फिर से सैर करने लगे।

अचानक मोनू कहने लगा, ''दादाजी, यह पिल्ला पता नहीं खाना कैसे खाता होगा। कल सेद इसके लिए एक रोटी ले आया करेंगे।''

''जरूर बेटा, जरूर ले आया करेंगे।'' दादाजी ने कहा।

''मगर दादाजी, सुबह तो यह रोटी खा लेगा, पर फिर सारा दिन भूखा नहीं रहेगा क्या?'' मोनू पूछने लगा।

''वो तो है। खा लेता होगा कुछ भी, जो मिल जाए।'' दादाजी कहने लगे।

''दादाजी, क्या हम ऐसा नहीं कर सकते कि इसे अपने घर ही ले जाएँ? घर में होगा तो इसे सुबह–शाम रोटी खिला दिया करेंगे।'' मोनू बोला।

''हाँ, ठीक है। रोटी क्या दूध भी दे दिया करेंगे पीने के लिए।'' दादाजी ने जवाब दिया।

''आज ही ले चलें इसे?'' मोनू पूछने लगा।

''बेटा, मैं भी यही सोच रहा था। पर इस पिल्ले से भी तो पूछ लो कि यह हमारे घर रहना चाहता भी है या नहीं।'' दादाजी कह रहे थे।

मोनू ने पिल्ले की ओर देखा। वह पूँछ हिलाते हुए बड़े प्यार से उसकी तरफ देख रहा था।

''चलो, घर चलते हैं।'' मोनू ने कहा तो वह पिल्ला उनके पीछे–पीछे उनके घर की तरफ चलने लगा।

■■■

जगमग दीपावली

कविता मुकेश

दीपावली का त्योहार नजदीक ही था। सभी घरों में सफाई अभियान चालू था। लोग अपने-अपने घरों में रंग-रोगन करवा रहे थे। जतिन के घर का सफाई का काम लगभग पूरा हो चुका था। अब बाजार से सजावट ओर मिठाइयाँ बनाने का सामान लाना बाकी रह गया था। मम्मी ने पापा को सामान की लिस्ट थमाते हुए बाजार जाने को कहा। हर त्योहार पर मम्मी घर में ही मिठाइयाँ बनाती थी। वे मानती थीं कि घर की बनी मिठाइयाँ स्वास्थ्य की दृष्टि से अच्छी होती हैं। वैसे भी वह पाक कला में निपुण थी और खूब स्वादिष्ट व्यंजन बनाती थीं।

पापा और जतिन बाजार सामान लेने

गए। जतिन को तो बस पटाखों से ही मतलब था। वह पापा के साथ बाजार आया ही इसीलिए था। बाजार में पटाखों की बहुत सारी दूकानें सजी हुई थीं। जब भी वह किसी पटाखे की दूकान को देखता, पापा को हाथ से इशारा करते हुए कहता, 'चलो न पापा, चलो देखो, कितने सारे पटाखे हैं!' पापा ने उसे समझाते हुए कहा, 'पहले सारा सामान खरीद लेते हैं, पटाखे सबसे आखिर में ही लेंगे क्योंकि उनसे खतरा रहता है, उन्हें बहुत संभाल कर रखना होता है।' जतिन पटाखे लेने के लिए बहुत आतुर था, उसने पापा के हाथ से सामान की लिस्ट ली और यह देखने लगा कि अब और क्या लेने को रह गया है। उसे यह जान कर संतोष हुआ कि अब सिर्फ किराने की दुकान का ही सामान शेष रह गया है।

जब वे सारा सामान ले चुके तो पापा जतिन को पटाखे की दुकान पर ले गए। जतिन ने खुशी-खुशी अपनी पसंद के पटाखे एक टोकरी में इकट्ठे करने शुरु कर दिए। जतिन कोई भी पटाखा और बम छोड़ना ही नहीं चाह रहा था। उसका मन कर रहा था कम से कम हर एक पटाखे का एक पीस तो ले ही ले। पापा ने टोकरी में से बड़े-बड़े बम यह कहकर निकाल दिए तुम अभी इनके लिए काफी छोटे हो, जब बड़े हो जाओगे तब इस तरह के पटाखे लेना। जतिन को बुरा तो बहुत लगा पर कुछ बोला नहीं, सोचा, अगले साल ले लूँगा। दुकानदार ने सारे पटाखे पैक करने के बाद अंत में जतिन को अपनी तरफ से एक रंग-बिरंगी माचिस की डिब्बी भी दे दी, जिसे पाकर जतिन और भी खुश हो गया।

घर पहुँचते ही आंगन में जतिन अपने सभी पटाखे बिखराकर बैठ गया ओर उन्हें खुशी से निहारने लगा। वह एक-एक पटाखा देखता और उसको अलग रख देता। जब अंत में उसके हाथ में रंग-बिरंगी माचिस की डिब्बी आई तो उसने उत्सुकतावश यह जानने के लिए कि इसे जलाने से कौन से रंग की आग निकलती है, उसने एक तीली जलाई तो अनजाने ही उसके हाथ से जलती हुई तीली खुले हुए पटाखों के बीच में जा गिरी और पटाखे जलने और तेज आवाज करते हुए फूटने लगे। यह देख वह बुरी तरह डर कर भागा। उसके मम्मी-पापा भी आवाजें सुनकर भागते हुए आए और सबसे पहले जतिन को संभाला। उसे ठीक-ठाक पा कर मम्मी ने हाथ जोड़ कर भगवान का लाख-लाख शुक्रिया किया। कुछ ही मिनटों में उसके सारे पटाखे जल कर खाक हो गए। पूरा घर धुआँ-धुआँ हो गया। घर का वातावरण दमघोटू होने लगा। मम्मी ने घर के सभी दरवाजे और खिड़कियाँ खोल दीं ताकि धुआँ बाहर निकल जाए। पटाखों की आवाज सुनकर और धुआँ देख कर आस-पास के घरों से बच्चे और बड़े भागकर आ गए। जतिन को काटो तो खून नहीं। वह एकदम जड़ हो गया, न रो रहा था और न हँस रहा था, बस मूर्ति बन कर खड़ा-खड़ा जल चुके पटाखों को देख रहा था।

पापा ने जतिन की यह दशा देखी तो उन्हें बड़ा अफसोस हुआ। वह सोच रहे थे, ''बच्चे ने बड़ी हसरत से पटाखे खरीदे थे कि दीपावली पर जलाएगा।'' जतिन को खुश करने के लिए पापा बोले ''बेटा जो हुआ सो हुआ, तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचा हमारे लिए यही काफी है, कुछ देर में फिर से बाजार चलकर बहुत सारे पटाखे ले आएँगे।''

''नहीं पापा, नहीं चाहिए मुझे पटाखे'', जतिन ने जैसे मन ही मन कुछ ठान लिया हो, ''बस एक तीली लगी और सारे पटाखे खत्म।'' अचानक उसकी आँखों से आँसू बहने लगे थे और वह रोता हुआ कहने लगा, ''आप कितनी मेहनत करते हैं पैसे कमाने के लिए और हम बच्चे बिना कुछ सोचे-समझे कुछ धमाकों की आवाजों और रंग-बिरंगी रोशनी देखने के लिए आपकी मेहनत पर पानी फेर देते हैं।'' बोलते-बोलते वह सुबकने ही लगा था, ''यह खेल है भी तो कितना खतरनाक, यह तो बहुत अच्छा हुआ कि आपने मुझे बड़े-बड़े बम नहीं लेने दिये और हम किसी हादसे का शिकार होने से बच गए।''

उसका दोस्त संग्राम जो कि पड़ोस में ही रहता था आवाज सुन कर वहाँ आ गया था, कहने लगा, 'अंकल, जतिन ठीक कह रहा है, देखो कितना धुआँ-धुआँ हो रहा है, साँस लेने में भी मुश्किल हो रही है, अब मैं भी पटाखे न तो खरीदूँगा और न ही जलाऊँगा।' उसका एक और दोस्त मोनू भी बोला, ''हाँ, और उन पैसों से हम मिठाई और कपड़े खरीदेंगे और हमारे आस-पड़ोस में जो गरीब बच्चे रहते हैं उनमें बाँट देंगे, उनका मन भी तो दीपावली मनाने का करता होगा।''

जतिन के मम्मी-पापा और मोहल्ले के दूसरे लोग अपने बच्चों को बड़ा होता हुआ देख रहे थे। इस बार दीपावली की जगमगाहट एक नए रूप में दिखाई दे रही थी।

■■■

शिवचरण सरोहा की तीन लघु बाल कहानियाँ

पानी बरसा

बरसात न हुई। सब उदास थे। तालाब सूखे। रेत ही रेत। रेत का गाँव। बच्चे ने एक नाव बनाई। रेत पर रख दी। फिर दूसरे बच्चे ने भी नाव बनाई। रोज नाव बनने लगीं। बादल ने नाव देखी। दूसरे बादल ने भी नाव देखी। बादलों ने नाव के पीछे नाव देखी।

एक दिन बादल आए। आकाश में छाए। गड़गड़ाए। बिजली चमकी। फिर पानी बरसा। झम–झम–झम। पानी ही पानी। इधर पानी। उधर पानी। पानी पर नाव चली। नाव के पीछे नाव चली। एक–दो नहीं। कई नाव चलीं। डगर–डगर। गली–गली।

बीज

भूखी गिलहरी इधर–उधर जमीन खोद कर कुछ ढूँढ़ रही थी। थक–हार कर एक पौधे के पास जा बैठी।

''क्या ढूँढ़ रही हो ?'' पौधा बोला।

''मक्की के बीज। मैंने यहीं कहीं दबाए थे।''

''नहीं मिले ?'' पौधा मुस्काया।

''न...नहीं।''

''मिलेंगे भी नहीं।''

''क्यों ?''

''मैं ही तो हूँ तुम्हारा बीज। तुम भूल गई और मैं उग आया।... दाने के लिए तो अभी इंतजार करना पड़ेगा।''

गिलहरी ने हैरानी से पौधे को देखा।

शेर का खून

मच्छर ने अपना सूंड वाला इंजेक्शन सीधा किया। और शेर के कान पर बैठकर, खींच लिया उसका खून।

''बढ़िया है। मजा आया।'' कहकर सूंड हिलाई।

फिर मच्छर ने भिनभिनाते हुए सोचा।

''शेर का खून पिया है। कुछ तो ताकत आएगी।''

ऐंठा हुआ मच्छर शेर बनकर दीवार पर बैठ गया। तभी जीभ लपलपाती हुई छिपकली दीवार पर आई। मच्छर छिपकली को देखकर जोर से भिन–भिन करने लगा। शेर का खून पीकर उसे लग रहा था कि उसकी भिन–भिनाहट दहाड़ हो चली होगी। छिपकली उसकी ओर बढ़ी। वो और जोर से भिन–भिनाया लेकिन छिपकली पर कोई असर नहीं हुआ। छिपकली झपटी। शुक्र था कि मच्छर बच गया। उड़ता हुआ मच्छर सोच रहा था।

''क्या शेर का खून भी मच्छर की तरह होता है ?''

■■■

फादर ऑफ इंग्लिश डिक्शनरी सैमुएल जॉनसन

कुसुम अग्रवाल

सैमूएल जॉनसन को लोग अक्सर प्यार से डॉक्टर जॉनसन और फादर ऑफ द मॉडर्न डिक्शनरी के नाम से बुलाना पसंद करते थे। एक कवि, निबंधकार, नैतिकतावादी, साहित्यकार आलोचक, जीवनीकार, संपादक और शब्दालेखक के रूप में जॉनसन का इंग्लिश लिट्रेचर में काफी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। 1750 में जॉनसन ने वृहत अंग्रेजी डिक्शनरी का निर्माण किया था जिसे 1755 में पब्लिश किया गया था। इसी कारण उन्हें फादर ऑफ द मॉडर्न डिक्शनरी कहा जाता था। यह पहली ऐसी डिक्शनरी थी जिसके द्वारा लोग आसानी से किसी भी शब्द का अर्थ और उसका सही उच्चारण जान सकते थे।

उन्होंने इस डिक्शनरी को बनाने के लिए अपना 9 वर्ष का योगदान दिया था। यह उस समय तक की एकमात्र अंग्रेजी डिक्शनरी थी जबतक कि 1928 में ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी का निर्माण नहीं हुआ था।

फादर ऑफ इंगलिश डिक्शनरी सैमुअल जॉनसन का जन्म इंग्लैंड के लिचफील्ड नामक स्थान पर 18 सितंबर, 1709 ई. को हुआ था। उनका जन्म एक स्वस्थ शिशु के रूप में नहीं हुआ था, इसलिए जिस वक्त उनका जन्म हुआ उस वक्त सबसे बड़ा सवाल तो यह पैदा हुआ कि वे जीवित भी बचेंगे या नहीं।

शैशवकाल में ही जॉनसन को कई रोग हो गए। उनके परिणामस्वरूप एक तो उनके चेहरे पर दाग-धब्बे हो गए; दूसरे, उन्हें सुनने में कठिनाई होती थी और तीसरे, उनकी एक आँख की रोशनी भी जाती रही। इन शारीरिक कमियों तथा अपनी गरीबी के कारण जॉनसन दूसरे बच्चों से अलग-थलग पड़ गए। फिर भी वे बचपन से ही स्वाभिमानी और आत्मनिर्भर थे।

एक बार उनकी बेबी सिटर नर्सरी स्कूल से

उन्हें लेने के लिए समय पर नहीं पहुँच सकी। तब जॉनसन ने यह तय किया कि वे एक चौपाए की तरह चलते हुए खुद ही घर पहुँच जाएँगे। चौपाए की तरह चलकर इसलिए कि रास्ते में कोई गड्ढा या नाला हो तो उसमें गिरने से बच सकें। बेबी सिटर भी बाद में पहुँच गई और उसने कुछ दूर तक उनका पीछा किया, लेकिन जब जॉनसन ने उसको अपने पीछे आते हुए देखा तो उसने बड़ी तीव्रता से उसका विरोध किया। इस घटना से यह साबित होता है कि शारीरिक कमियों के बावजूद जॉनसन बचपन से ही आत्मनिर्भर रहना चाहते थे और उनकी यह आदत जीवन में अंत तक बनी रही।

उनके पिता का नाम माइकेल जॉनसन था। वे बुकसेलर थे। जॉनसन को किताबें पढ़ने का शौक था। पिता की किताबों की दुकान से उनका वह शौक पूरा हुआ और केवल शौक ही पूरा नहीं बल्कि तरह-तरह की किताबें पढ़ने से बचपन में ही उनको कई विषयों का अच्छा ज्ञान हो गया।

बड़े होकर जॉनसन ऑक्सफोर्ड में पढ़ने के लिए गए। वहाँ एक वर्ष तो किसी तरह रुके, लेकिन फिर पढ़ाई बीच में ही छोड़कर उन्हें घर आना पड़ा। इसका सबसे बड़ा कारण उनकी गरीबी थी। जॉनसन ने ऑक्सफोर्ड छोड़ दिया। जॉनसन एक प्रतिभाशाली विद्यार्थी थे और यदि ऑक्सफोर्ड में पढ़ाई करते तो उनकी प्रतिभा में निखार आ जाता, लेकिन पढ़ाई बीच में ही छोड़ने के कारण उनको झटका लगा और वे अवसाद से घिर गए। उस अवसर पर उनके एक मित्र एडमंड हेक्टर ने उनकी मदद की और उन्हें हिम्मत दी। उस मित्र के कारण जॉनसन अपने अवसाद से बाहर निकलकर फिर गतिशील हो गए।

1735 ई. में जॉनसन ने 26 वर्ष की उम्र में अपने से 20 वर्ष बड़ी एक विधवा एलिजाबेथ टेरी पोर्टर से विवाह कर लिया।

वैवाहिक जीवन को चलाने के लिए उन्होंने एक स्कूल में नौकरी की। जॉनसन को शिक्षक की नौकरी तो मिल गई, लेकिन वह ज्यादा समय तक टिकी नहीं। इसका एक कारण तो यह था कि उनके पास कोई डिग्री नहीं थी। उसके अलावा उनके काम करने का और बोलने का ढंग, उनकी अकड़ और ऊपर से उनके शरीर का भद्दापन विद्यार्थियों में उनके प्रति आदर-भाव नहीं उत्पन्न कर सका।

तब फिर 1737 में अपना भाग्य आजमाने के लिए वे लंदन आ गए। वहाँ उन्हें कई पत्र-पत्रिकाओं में लेख लिखने का काम मिला। पुस्तकों की समीक्षाएँ भी वे करते थे और कुछ दूसरे काम भी करते थे। इस तरह लंदन में रहते हुए वे एक रचनाकार के रूप में प्रतिष्ठित हो गए। उनकी 1738 में प्रकाशित कविता 'लंदन' तथा 1749 में प्रकाशित कविता 'द वैनिटी ऑफ ह्यूमैन विशेज' बहुत प्रसिद्ध हुईं और उन्हें महान रचनाओं का दर्जा मिला।

1746 में जॉनसन ने एक ऐसा काम शुरू किया, जिसके पूरा होने पर उनका नाम साहित्य जगत में अमर हो गया। वह काम था इंगलिश की एक प्रामाणिक डिक्शनरी तैयार करना। उनका यह काम उनके जीवन का सबसे बड़ा काम साबित हुआ।

18 जून, 1746 को जॉनसन ने एक प्रकाशक के साथ डिक्शनरी तैयार करने का कांट्रैक्ट किया। कांट्रैक्ट में यह शर्त थी कि जैसे-जैसे पांडुलिपि की किस्तें प्रकाशक को सौंपी जाएँगी, वैसे-वैसे उन्हें तयशुदा पारिश्रमिक की किस्तें भी मिलती जाएँगी। सारे काम के लिए जॉनसन को केवल 1500 गिनीज मिलनी थीं और पांडुलिपि तैयार करने का सारा खर्च उनको स्वयं उठाना था। जॉनसन ने सोचा- तीन साल में काम पूरा हो जाएगा ।

जॉनसन की आर्थिक स्थिति तो खराब थी

ही, इसलिए उन्होंने आर्थिक सहायता के लिए कई बड़े लोगों से अपील की। उन बड़े लोगों में एक लॉर्ड चेस्टरफील्ड भी थे, जिनको जॉनसन अपना संरक्षक बनाना चाहते थे। अपनी अपील में जॉनसन ने यह लिखा था कि जो लोग इस काम के लिए आर्थिक सहायता देंगे, उन्हें डिक्शनरी के पूरे होने पर उसके पहले संस्करण की एक प्रति भेंटस्वरूप दी जाएगी। लॉर्ड चेस्टरफील्ड से जॉनसन को बहुत उम्मीदें थीं, लेकिन उन्होंने उनकी अपील पर कोई ध्यान नहीं दिया। अपनी आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए तथा डिक्शनरी के काम के लिए पैसा जुटाने के लिए जॉनसन ने 'द रैम्बलर' शीर्षक से एक लेखमाला लिखी, जो बाद में बहुत प्रसिद्ध हुई।

बहरहाल, डिक्शनरी का काम तो किसी तरह जॉनसन चलाते रहे, लेकिन अनेक कारणों से उसमें समय बहुत लग गया। तीन साल की जगह जब उसमें 10 साल का समय लग गया तो आर्थिक स्थिति पहले से ज्यादा ही खराब होनी थी। फिर भी जॉनसन ने अपनी हिम्मत, मेहनत और लगन से एक महान कार्य पूरा किया। मजे की बात यह है कि यह काम उन्होंने केवल अपने बल पर किया, डिक्शनरी स्वयं ही लिखी तथा सारा खर्च भी स्वयं ही उठाया। 1756 में डिक्शनरी पूरी हो गई। उसके पूरे होने पर लॉर्ड चेस्टरफील्ड ने सहायता की पेशकश की। तब जॉनसन ने उनको एक पत्र लिखा, जिसमें उन्होंने अपनी तुलना उस आदमी से की, जो पानी में डूबते हुए सहायता के लिए चिल्ला रहा था, तब कोई उसकी मदद के लिए आगे नहीं आया और जब वह अपनी कोशिशों से किनारे पर पहुँच गया तो किसी ने सहायता के लिए हाथ बढ़ाया। व्यंग्यात्मक शैली में लिखा गया जॉनसन का यह पत्र बाद में एक ऐतिहासिक पत्र बन गया।

जॉनसन ने लॉर्ड चेस्टरफील्ड द्वारा भेजा

गया बड़ी रकम का चेक उस पत्र के साथ वापस भेज दिया और किसी तरह की आर्थिक सहायता उस समय लेने से इनकार कर दिया, जब काम पूरा हो चुका था।

हालाँकि डिक्शनरी तो जॉनसन से पहले भी कुछ लोगों ने बनाई थी, लेकिन जॉनसन की डिक्शनरी काफी अनुसंधान के बाद तैयार की गई थी। उसमें शब्दों को जिस तरह परिभाषित किया गया था, वह बहुत सावधानीपूर्वक किया गया था। जॉनसन की उस डिक्शनरी से अंग्रेजी भाषा भी प्रतिष्ठित हुई। उसका साहित्यिक रूप साहित्य–जगत के सामने उजागर हुआ। इन सब कारणों से वह डिक्शनरी प्रामाणिक मानी गई और जॉनसन को उसके कारण 'फादर ऑफ इंगलिश डिक्शनरी' की गौरवपूर्ण पदवी मिली।

डिक्शनरी का काम पूरा हो जाने के बाद अपनी आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए जॉनसन ने 'द आइडलर' शीर्षक से एक दूसरी लेखमाला आरंभ की। इसके निबंध 'द रैम्बलर' के निबंधों से छोटे थे। यह लेखमाला दो साल तक चली।

1759 में जॉनसन ने एक उपन्यास लिखा, जो एक सप्ताह में ही पूरा हो गया। इसका नाम था 'रैसेलास'। यह उपन्यास उन्होंने

पूरा अपनी माँ का अंतिम संस्कार करने तथा अपना कर्ज चुकाने के लिए लिखा था। दरअसल, डिक्शनरी तैयार होने के बाद वे प्रसिद्ध तो बहुत हो गए थे, लेकिन डिक्शनरी के लिए जो कर्ज उन्होंने लिया था, वह तो चुकाना ही था। असल में 1750 से 1760 तक की अवधि उनकी परीक्षा की घड़ी थी। इस अवधि में उन्हें कई कठिनाइयों और संकटों का सामना करना पड़ा। कुछ बातों का उल्लेख तो पहले हो ही चुका है, एक और बात यह हुई कि 1752 में, डिक्शनरी तैयार करने की अवधि में ही उनकी पत्नी का भी निधन हो गया था और उनकी स्मृतियों में डूबे रहकर भी वे अपने काम में निष्ठा से लगे रहे।

आखिर परीक्षा की घड़ी खत्म हुई। जॉनसन की हालत कुछ सुधरी और सरकार की तरफ से भी 1762 में उन्हें पेंशन देने का प्रस्ताव मिला। पेंशन से उन्हें काफी सहायता मिली और उनका लेखन-कार्य आगे बढ़ा। 1763 में जॉनसन की भेंट जेम्स बुजवेल नामक एक युवक से हुई, जो स्कॉटलैंड का रहने वाला था। वे दोनों गहरे दोस्त बन गए। कुछ समय बाद जेम्स बुजवेल ने जॉनसन की एक जीवनी 'द लाइफ ऑफ सैमुएल जॉनसन' शीर्षक से लिखी। यह जीवनी बहुत प्रशंसित हुई। स्वयं जॉनसन ने और भी कई साहित्यिक पुस्तकें लिखीं।

13 दिसंबर, 1784 को उनका निधन हो गया। जेम्स बुजवेल द्वारा लिखी उनकी जीवनी 1791 में प्रकाशित हुई। आज सैमुएल जॉनसन हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन जो काम उन्होंने किया, उसके लिए वे सदा याद किए जाएँगे। उनके सम्मान में गूगल आज भी डूडल जारी करता है।

■■■

रोचक जानकारी

1. उल्लू ही एकमात्र ऐसा पक्षी है जो नीले रंग को देख सकता हैं।
2. एक डॉलफिन को फोन पर किसी दूसरे डॉलफिन से बात कराया जाय तो वे एक दूसरे की आवाज पहचान सकते हैं।
3. तितलियाँ अपने पैरों से स्वाद लेती हैं।
4. तितली की आँखों में हजारों लेंस होते हैं लेकिन वे सिर्फ लाल, हरा और पीला रंग ही देख सकते हैं।
5. हाथी 3 मील की दूरी से पानी को सूंघ सकते हैं।
6. मगरमच्छ कलर ब्लाइंड होते हैं।
7. हिरण की आँखें सर्दियों के मौसम में नीली हो जाती हैं ताकि वे हलकी रौशनी में भी देख सकें।
8. एक टिड्डा अपने शरीर की लंबाई से 20 गुना लंबी छलांग लगा सकता है।
9. बिल्लियाँ अपने पंजों के जरिये पसीना बाहर निकालती हैं।
10. हमिंगबर्ड एकमात्र पक्षी हैं जो पीछे की ओर उड़ सकते हैं।
11. म्यूजिक सुनते समय गाय ज्यादा दूध देती हैं।

अगर तुम भी ऐसी रोचक जानकारियाँ जानते हो तो हमें भेजो। चयनित जानकारियों को अगले अंक में उसे प्रकाशित किया जाएगा।

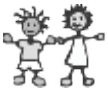

समाचार में

2–8 अक्टूबर वन्यजीव सप्ताह

सुमन कुमार

दोस्तो! 2–8 अक्टूबर को राष्ट्रीय वन्यजीव सप्ताह मनाया जाता है। भारत में वन्यजीवों की अनेक तरह की प्रजातियाँ पाई जाती हैं और इनके संरक्षण के प्रति लोगों में जागरूकता लाने के लिए स्कूलों–कॉलेजों और खासकर चिड़ियाघरों में गतिविधियाँ और प्रतियोगिताएँ– जैसे– चित्रकला, निबंध–लेखन, कविता–लेखन फिल्मों की स्क्रीनिंग आदि आयोजित की जाती हैं। आप इसमें अवश्य कभी भाग लिए होंगे। मुझे ऐसा विश्वास है।

दोस्तो क्या आप जानते हैं कि वन्यजीवों की रक्षा के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए सबसे पहले 1952 में वन्यजीव सप्ताह पर विचार किया गया था। शुरुआती 7 जुलाई, 1955 में वन्यजीव दिवस मनाया गया था, जिसे बाद में 1957 में वन्यजीव सप्ताह के रूप में मनाया जाने लगा।

इस अभियान का उद्देश्य यह है कि हम नागरिक प्रत्येक वन्यप्राणी, पशु–पक्षी और पौधे को पूर्ण रूप से सुरक्षा प्रदान करें। सरकार ने अधिनियम के तहत सभी जंगली जानवरों और पक्षियों इत्यादि की शिकार पर रोक लगाई. सरकार द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों के उल्लंघन के लिए दण्ड का भी प्रावधान रखा गया। मानव, पर्यावरण और वन्यजीव एक–दूसरे से किसी–ना–किसी रूप से जुड़े हुए हैं। किसी की भी समाप्ति, प्रकृति के अनुकूल नहीं है। वन्यजीवों के बिना मनुष्य का अस्तित्व नहीं रहेगा और मानव जीवन संकट में पड़ जाएगा।

आओ इसे हम एक आसान उदाहरण से समझते हैं– स्टैंडफोर्ड के इकोलॉजिस्ट पाल

'बाल किलकारी' आपके घर
(सदस्यता पत्र)

दिनांक .....
नाम (वर्गः विद्यार्थी / शिक्षक / संस्था / अन्य)
.....
.....
• मेरा पता बदल गया है। कृपया अब पत्रिका दिए गये पते पर भेजें।
पत्राचार का पता .....
.....
.....
.....पिन .....
फोन / मोबाइल .....
ई–मेल .....
• बाल किलकारी पत्रिका की नए सदस्यता, या
• मेरी वर्त्तमान सदस्यता.....महीने में समाप्त हो रही है। सदस्यता के नवीकरण के लिए शुल्क दिये गए विवरण के अनुसार भेज रहा / रही हूँ।
☐ 225 में एक वर्ष ☐
☐ 425 में दो वर्ष ☐
☐ 625 में तीन वर्ष ☐
अतिरिक्त डाक खर्च : साधारण डाक खर्च ☐ 72 प्रति वर्ष रजिस्ट्री बुक पोस्ट प्रति अंक ☐ 37 के लिए सदस्यता चाहता / चाहती हूँ।
चेक / ड्राफ्ट / मनीआर्डर नं .....
मूल्य .....
बैंक का नाम एवं शाखा .....
.....
.....
• पत्रिका से संबंधित राशि निम्न खाते में NEFT के द्वारा भेज सकते है।
खाता का नाम–बिहार बाल भवन किलकारी
खाता सं0– 245001000005080
IFSC – IOBA0002450
शाखा – शिक्षा भवन, सैदपुर, पटना
बैंक– इंडियन ओवरसीज बैंक

भुगतान के पश्चात् सदस्यता पत्र के साथ ट्रांजेक्शन डिटेल ई–मेल / वाट्सअप करें।
• चेक / बैंक ड्राफ्ट / मनीऑडर से **बिहार बाल भवन किलकारी, पटना** के नाम से भेजें।
शुल्क भेजने का पताः
'किलकारी'
बिहार बाल भवन
सैदपुर, पटना–800 004 (बिहार)

बाल किलकारी पत्रिका के सभी स्तम्भों में आपकी रचना आमंत्रित है।

- आप अपनी रचनाओं को ई–मेल, वाट्सअप के माध्यम से वर्ड फाइल में भेज सकते है।
- आपकी रचना को स्वीकार व अस्वीकार करने का सर्वाधिकार सम्पादकीय टीम की होगी।
- आपके द्वारा भेजी गई रचनाओं को अप्रकाशित होने की स्थिति में वापसी सम्भव नहीं हैं।
- कृपया अपनी रचनाओं को दो माह के अन्तराल पर ही हमें प्रेषित करें।
- कविता, कहानी एवं अन्य स्तम्भ के लिए रचनाएँ छोटी होनी चाहिए।
- तुम्हारी रचनाए स्तम्भ के लिए बाल रचनाकारों की मौलिक रचनाएँ आमंत्रित है।

किलकारी बिहार बाल भवन बच्चों के लिए मनोरंजक, प्रेरणादायक एवं शिक्षाप्रद पुस्तकें भी प्रकाशित करता है। पुस्तके मँगवाने के लिए निम्न पते पर सम्पर्क करें। या Amazon से दिये गए QR कोड द्वारा स्कैन कर प्राप्त कर सकते है।

amazon.in

एहरलिक 'रिवेट पोपर परिकल्पना' की अवधारणा दी। उन्होंने बताया कि एक वायुयान (एयरप्लेन) की रिवेटों (कीलक) द्वारा सभी भागों को जो जोड़ा जाता है। यदि एयरप्लेन का हर यात्री अपने साथ एक कीलक को ले जाने लगे तब आरंभ में जहाज की सुरक्षा प्रभावित नहीं होगी, लेकिन यदि और अधिक कीलक को हटा लिए जाएँ तब कुछ समय बाद जहाज खतरनाक रूप से कमजोर हो जाएगा. आगे उन्होंने यह भी बताया कि कौन–सा रिवेट हटाया गया है यह भी आवश्यक हो जाता है, क्योंकि जहाज के पंख का रिवेट हटाना हवाई सुरक्षा के दृष्टि से जहाज के अंदर सीट व खिड़कियों के रिवेट हटाने से अधिक महत्वपूर्ण है।

तो देखा दोस्तो, इसी तरह अगर वन्यजीवों का भी शिकार होता रहा तो ईकोसिस्टम का संतुलन बिगड़ जाएगा और मानव जीवन त्रस्त हो जाएगा। भारत सरकार ने वन्यजीवों के संरक्षण के लिए कई कार्यक्रम शुरू किए हैं। इन प्रमुख कार्यक्रमों में कई कार्यक्रम है। जैसे– प्रोजेक्ट टाइगररू यह 1972 में लांच किया गया था और यह भारत सरकार का सबसे सफल वन्यप्राणी कार्यक्रम है। इसके अलावा प्रोजेक्ट एलीफैंट, मगरमच्छ संरक्षण परियोजना, संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम–सी टर्टल प्रोजेक्ट, संरक्षित क्षेत्र वन्यजीव संरक्षण अधिनियम और वेटलैंड (संरक्षक और प्रबंधन) नियम जैसे कार्यक्रम प्रमुख रूप से शामिल हैं. सरकार इन कार्यक्रमों से वन्यजीवों की सुरक्षा और संरक्षण के लिए प्रयासरत है। हम नागरिकों का फर्ज है कि हम इसके बारे में लोगों को शिक्षित–जागरूक करें और वन्यजीवों का हो रहे शिकार को रोकने किए प्रेरित करें। हमारा यह छोटा–छोटा कदम वन्यजीवों के विलुप्त होने से बचा सकता है। जिससे पृथ्वी पर प्रकृति का संतुलन बना रहेगा। हम एक हरित पर्यावरण में को भी बढ़ावा देंगे। और हाँ दोस्तो, इस बार अपने स्कूल या चिड़ियाघरों में आयोजित होने वाली प्रतियोगिताओं में अवश्य भाग लेना।

■■■

क्रमशः

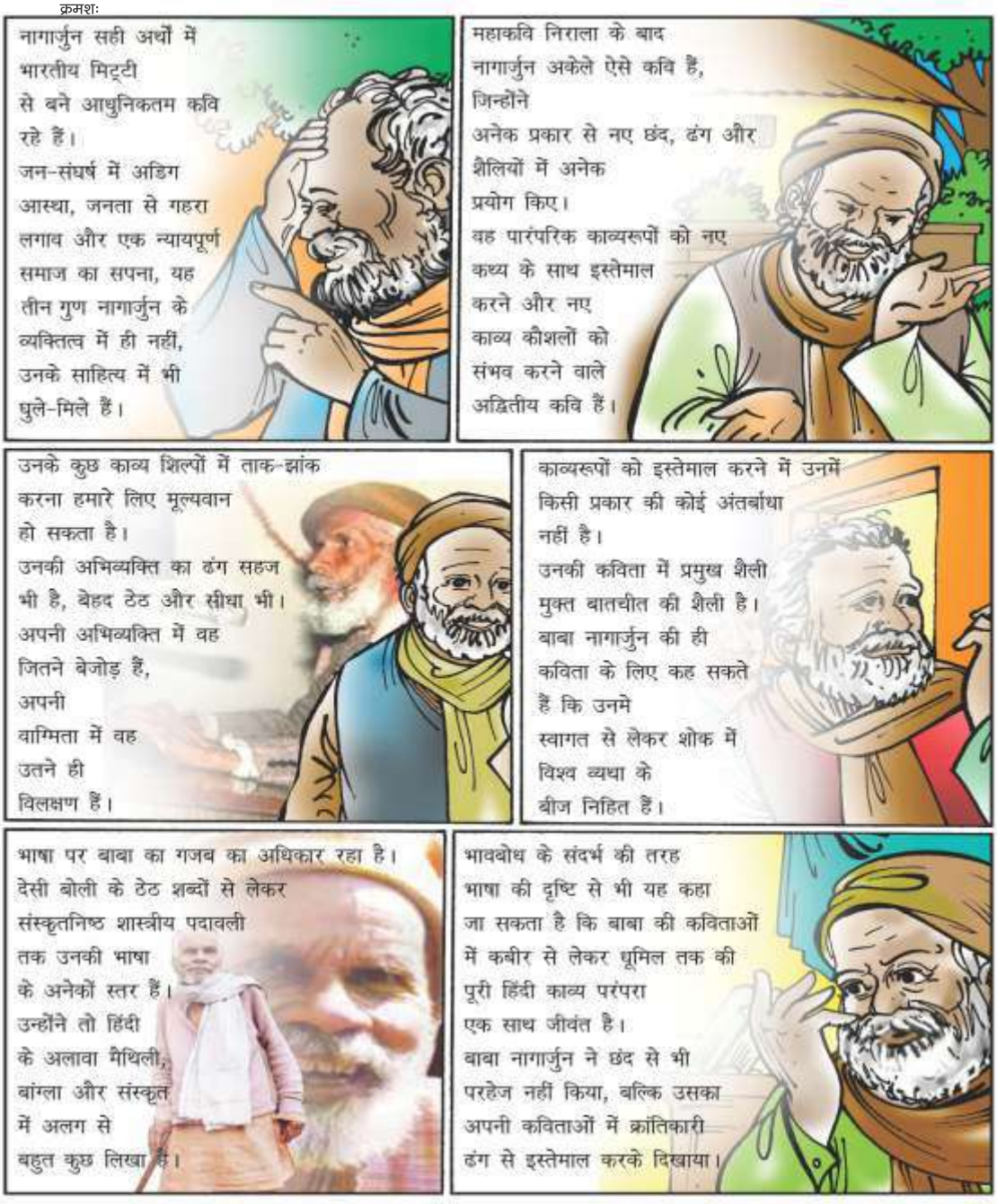

परिकल्पना	सम्पादक	कला एवं आवरण	सम्पादन सहयोग
ज्योति परिहार	शिवदयाल	उमेश शर्मा	सीताराम शरण

प्रकाशक व मुद्रक श्रीमती ज्योति परिहार द्वारा किलकारी बिहार बाल भवन (शिक्षा विभाग, बिहार सरकार), सैदपुर, पटना–800004 से प्रकाशित।

E-mail : publication@kilkaribihar.in
Mob.: 9835224919, 7463878822

सदस्यता शुल्क : व्यक्ति और संस्था के लिए वार्षिक – 200/-

टिम–टिम तारें

टिम–टिम तारे, टिम–टिम तारे
कितने सुन्दर कितने प्यारे
आसमान की सैर लगाते
और रात को जगमगाते।

हम से दूर कितने रहते तारे
कितने अच्छे कितने न्यारे
टिम–टिम तारे, टिम–टिम तारे
कितने सुन्दर कितने प्यारे।

प्रिंस कुमार
एस.न. 806

'किलकारी'
बिहार बाल भवन
सैदपुर, पटना–800004 (बिहार) भारत
☎ 0612-2661211 9835224919 7463878822
info@kilkaribihar.in, publication@kilkaribihar.in
www.kilkaribihar.in www.facebook.com/kilkaribihar
kilkaribihar.blogspot.com www.youtube.com/kilkaribihar
www.instagram.com/kilkaribihar www.twitter.com/kilkaribihar

पत्रिका यहाँ से भी प्राप्त करें
amazon.in